नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 336, नई दिल्ली, बुधवार 04 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

ज़िंदगी में कभी भी अपने किसी भी हुनर पर घमंड मत करना, क्योंकि... पत्थर जब पानी में गिरता है तो, अपने ही वज़न से डूब जाता है

03 भगवान विष्णु ने मारा था शुक्राचार्य की माँ को, बदले की भावना में बने दैत्यगुरु !

06 हर कहानी एक विज्ञान की कहानी है: विज्ञान के सार्वभौमिक स्वरूप...

08 ओडिशा की राजनीति में BJD सबसे नीची पार्टी है: बिरंची नारायण त्रिपाठी

डिजिटल संप्रभुता बनाम डेटा साम्राज्यवाद

व्हाट्सऐप - मेटा, डीपीडीपी एक्ट 2023 और भारतीय संविधान की ऐतिहासिक टकराहट

-सुप्रीम कोर्ट की फटकार संविधान नहीं मानते तो भारत छोड़कर जाइए - अगली सुनवाई 9 फ़रवरी 2025

संजय कुमार बाठला

व्हाट्सऐप द्वारा वर्ष 2021 में लाई गई टेक इट ऑर लीव इट प्राइवेसी पॉलिसी पर प्रश्न उठा? क्या वैश्विक टेक कंपनियाँ भारतीय संविधान के दायरे में काम करने को तैयार हैं या नहीं?

डीपीडीपी अधिनियम 2023 का मूल उद्देश्य केवल डेटा चोरी रोकना नहीं है, बल्कि नागरिकों को अधिकार देता है कि उनका डिजिटल अस्तित्व भी उतना ही संरक्षित हो जितना उनका भौतिक अस्तित्व

भारत इक्कीसवीं सदी में केवल एक विशाल उपभोक्ता बाज़ार नहीं रहा, बल्कि वह अब डिजिटल लोकतंत्र, डेटा संप्रभुता और नागरिक निजता के वैश्विक विमर्श का केंद्र बन चुका है।

करोड़ों भारतीय नागरिकों का डिजिटल जीवन,

* उनकी बातचीत स्वास्थ्य जानकारी,
* आर्थिक लेन - देन,
* सामाजिक व्यवहार और वैचारिक झुकाव

अब तकनीकी प्लेटफॉर्मों के सर्वरों में दर्ज हो रहा है। ऐसे समय में यह प्रश्न केवल तकनीकी या व्यावसायिक नहीं रह जाता, बल्कि सीधे - सीधे संविधान, मानवाधिकार और राज्य की संप्रभु जिम्मेदारी से जुड़ जाता है।

डिजिटल पर्सनल डेटा संरक्षण अधिनियम (डीपीडीपी एक्ट), 2023 इसी ऐतिहासिक ज़रूरत की उपज है, जो यह स्पष्ट करता है कि भारत में किसी भी नागरिक का डेटा अब अनियंत्रित कॉर्पोरेट शक्ति के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता।

डीपीडीपी अधिनियम 2023 का मूल उद्देश्य

* केवल डेटा चोरी रोकना नहीं है, बल्कि
* यह नागरिकों को यह अधिकार देता है कि उनका डिजिटल अस्तित्व भी उतना ही संरक्षित हो जितना उनका भौतिक अस्तित्व।
* यह कानून स्पष्ट करता है कि डेटा किस उद्देश्य से, कितनी सीमा तक और कितनी अवधि के लिए प्रोसेस किया जा सकता है।
* यह अधिनियम सूचित सहमति को केंद्रीय तत्व बनाता है, ताकि कोई भी कंपनी चाहे वह भारत की हो या विदेशी, यूज़र को मानो या छोड़ो जैसी शर्तों में फँसाकर उसकी निजता का सौदा न कर सके।
* इस दृष्टि से भारत पहली बार डेटा को केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकार के रूप में स्थापित करता दिखता है।

इसी पृष्ठभूमि में व्हाट्सऐप और उसकी पैरेंट कंपनी मेटा का मामला केवल एक कंपनी की प्राइवेसी पॉलिसी तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि यह प्रश्न बन जाता है कि क्या वैश्विक टेक कंपनियाँ भारतीय संविधान के दायरे में काम करने को तैयार हैं या नहीं।

वर्ष 2021 में व्हाट्सऐप द्वारा लाई गई टेक इट ऑर लीव इट प्राइवेसी पॉलिसी ने भारतीय यूज़र्स को दो ही विकल्प दिए,

1. या तो नई शर्तें स्वीकार करें
2. या सेवा छोड़ दें।

यह नीति न केवल असमान शक्ति - संतुलन का उदाहरण थी, बल्कि इसने नागरिकों की वास्तविक सहमति की अवधारणा को भी खोखला कर दिया।

भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (एनसीएलएटी) ने नवंबर 2024 में इस नीति को प्रतिस्पर्धा कानून का उल्लंघन मानते हुए मेटा पर 213.14 करोड़ रूपए का जुर्माना लगाया।

आयोग का स्पष्ट मत था कि व्हाट्सऐप ने अपनी डॉमिनेंट पोज़िशन का दुरुपयोग करते हुए यूज़र्स को ऐसी शर्तें मानने के लिए मजबूर किया, जिनका व्यावसायिक लाभ सीधे मेटा के विज्ञापन मॉडल को जाता था।

यह जुर्माना केवल आर्थिक दंड नहीं था, बल्कि यह एक नियामकीय संदेश था कि भारत में डिजिटल बाज़ार अब फ्री - फॉर - ऑल नहीं रहेगा।

हालाँकि, जनवरी 2025 में एनसीएलएटी ने एक विरोधाभासी रुख अपनाया, उसने डॉमिनेंस के दुरुपयोग वाले निष्कर्ष को हटाते हुए भी जुर्माने को बरकरार रखा।

यह निर्णय कानूनी दृष्टि से जटिल था, क्योंकि यदि डॉमिनेंस का दुरुपयोग नहीं हुआ, तो फिर जुर्माने का आधार क्या है यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है।

इसी कानूनी असंगति को चुनौती देते हुए मेटा सुप्रीम कोर्ट पहुँची, लेकिन शायद उसे यह अनुमान नहीं था कि यह मामला केवल प्रतिस्पर्धा कानून तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सीधे भारतीय संविधान की आत्मा से टकराएगा।

मंगलवार, 3 फरवरी 2026 को सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई ने इस विवाद को ऐतिहासिक मोड़ दे दिया।

मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ ने जिस कठोरता और स्पष्टता से व्हाट्सऐप - मेटा की प्राइवेसी प्रैक्टिस पर सवाल उठाए, उसने यह संकेत दे दिया कि अब अदालत इस मामले को केवल कॉर्पोरेट नीति के रूप में नहीं देख रही।

3फरवरी 2026 को हुई सुनाई को गहराई से समझे तो केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर ने जब यह तर्क रखा कि व्हाट्सऐप की प्राइवेसी पॉलिसी शोषणकारी है और यूज़र्स के डेटा का व्यावसायिक उपयोग करती है, तब अदालत की प्रतिक्रिया असाधारण रूप से सख़्त थी।

मुख्य न्यायाधीश का कथन अगर हमारे संविधान का पालन नहीं कर सकते तो भारत छोड़कर जाइए किसी भीवैश्विक टेक कंपनी के लिए अब तक की सबसे तीखी न्यायिक चेतावनी मानी जा सकती है।

यह कथन केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि यह भारत की डिजिटल संप्रभुता की स्पष्ट घोषणा थी। अदालत ने यह रेखांकित किया कि कोई भी सेवा प्रदाता भारत में व्यापार तभी कर सकता है, जब वह भारतीय संविधान, मौलिक अधिकारों और नागरिकों की गरिमा का सम्मान करे।

अदालत ने यह भी कहा कि व्हाट्सऐप की प्राइवेसी पॉलिसी इतनी चालाकी से तैयार की गई है कि एक आम नागरिक चाहे वह गरीब बुज़ुर्ग महिला हो, सड़क किनारे वेंडर हो या केवल तमिल बोलने वाली ग्रामीण महिला उसके निहितार्थ कभी समझ ही नहीं सकती।

यह टिप्पणी भारत की सामाजिक - आर्थिक विविधता को केंद्र में रखती है और यह स्वीकार करती है कि सूचित सहमति केवल अंग्रेज़ी में लिखे लंबे दस्तावेज़ से नहीं आती सहमति तभी वास्तविक मानी जाएगी, जब यूज़र को पूरी तरह यह समझ हो कि उसका डेटा कैसे, क्यों और किसके साथ साझा किया जा रहा है।

इस सुनवाई को और गहराई से समझे तो सुनवाई के दौरान पीठ के अन्य माननीय जस्टिस ने बहस को और गहराई देते हुए कहा कि डीपीडीपी एक्ट भले ही प्राइवेसी की बात करता हो, लेकिन असली चिंता यूज़र्स की बिहेवियरल टेंडेंसीज़ को लेकर है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से यह प्रश्न उठाया कि जब डिजिटल फुटप्रिंट का उपयोग ऑनलाइन विज्ञापन और माइक्रो - टार्गेटिंग के लिए किया जा रहा है, तब यह केवल प्राइवेसी का मुद्दा नहीं रह जाता, बल्कि यह मानव व्यवहार के व्यावसायिक दोहन का मामला बन जाता है।

यह टिप्पणी वैश्विक स्तर पर फेसबुक - कैमब्रिज एनालिटिका जैसे घोटालों की याद दिलाती है, जहाँ डेटा का उपयोग लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करने तक में किया गया।

मुख्य न्यायाधीश ने स्वयं का उदाहरण देते हुए बताया कि जैसे ही कोई डॉक्टर व्हाट्सऐप पर दवाइयों के नाम भेजता है, कुछ ही मिनटों में उन्हीं दवाओं के विज्ञापन दिखने लगते हैं। यह उदाहरण इस बात की ओर इशारा करता है कि एंड - टू - एंड एनक्रिप्शन के दावों के बावजूद, मेटाडेटा और व्यवहारिक संकेतों का उपयोग किस हद तक व्यावसायिक प्रोफाइलिंग में किया जा रहा है।

यह सवाल केवल तकनीकी नहीं, बल्कि नैतिक और कानूनी भी है। मेटा के वकील ने अदालत में तर्क दिया कि व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए सीमित डेटा शेयरिंग की अनुमति है और कंपनी की नीतियाँ अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हैं। लेकिन अदालत ने इस दलील को स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

मुख्य न्यायाधीश की यह टिप्पणी अगर आपको डेटा का कोई भी हिस्सा बेचने लायक लगेगा, तो आप उसे बेच देंगे? कॉर्पोरेट मंशा पर सीधा प्रश्नचिह्न लगाती है?

अदालत ने यह भी कहा कि भारतीय उपभोक्ताओं की चुप्पी को उनकी सहमति नहीं माना जा सकता।

यूरोप का जीडीपीआर, अमेरिका में राज्य - स्तरीय डेटा कानून और अब भारत का डीपीडीपी एक्ट ये सभी संकेत देते हैं कि दुनिया अब डेटा फ्री मार्केट से डेटा गवर्नेंस की ओर बढ़ रही है।

भारत, अपने विशाल यूज़र बेस और लोकतांत्रिक मूल्यों के कारण, इस परिवर्तन में नेतृत्वकारी भूमिका निभा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट की यह सख़्त भूमिका यह संदेश देती है कि भारत केवल कानून बनाकर नहीं, बल्कि उन्हें लागू कराकर भी डिजिटल अधिकारों की रक्षा करेगा।

विश्लेषण यह मामला केवल व्हाट्सऐप या मेटा का नहीं है।

यह सवाल है कि डिजिटल युग में नागरिक की गरिमा, निजता और स्वायत्तता को कौन परिभाषित करेगा कॉर्पोरेट एल्गोरिद्म या लोकतांत्रिक संविधान।

9 फरवरी को होने वाली अगली सुनवाई और तीन - जजों की बेंच का निर्णय भारत के डिजिटल भविष्य की दिशा तय कर सकता है।

यदि अदालत नागरिकों के पक्ष में सख़्त मानक तय करती है, तो यह न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक नया डेटा - न्याय मॉडल प्रस्तुत करेगा।

यह संघर्ष दरअसल डेटा साम्राज्यवाद और संवैधानिक संप्रभुता के बीच है और इस बार, संकेत स्पष्ट हैं भारतीय संविधान पीछे हटने के मूड में नहीं है।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

महंगे एंटीबायोटिक लिखने की अनैतिक प्रवृत्ति: एक गंभीर जन-स्वास्थ्य संकट

परिवहन विशेष न्यूज

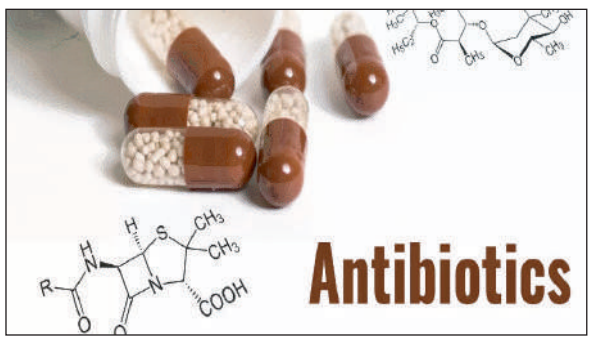

आज के आधुनिक चिकित्सा-युग में एंटीबायोटिक्स मानव जीवन रक्षक औषधियों के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। किंतु दुर्भाग्यवश, अनेक चिकित्सक मामूली संक्रमणों के उपचार हेतु भी बिना संकोच महंगी और चौथी पीढ़ी की एंटीबायोटिक्स रोगियों को लिख रहे हैं, जबकि ऐसे संक्रमणों का इलाज सस्ती, सुरक्षित और प्रभावी दवाओं—जैसे डॉक्सीसाइक्लिन—से सरलता से किया जा सकता है।

यह प्रवृत्ति न केवल रोगियों पर अनावश्यक आर्थिक बोझ डालती है, बल्कि संपूर्ण मानव समाज के लिए एक गंभीर खतरा भी उत्पन्न करती है।

फार्मास्यूटिकल कंपनियों के प्रलोभन और चिकित्सा-नैतिकता का क्षरण

फार्मास्यूटिकल कंपनियों द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न प्रकार के प्रलोभन—जैसे महंगे उपहार, विदेशी यात्राएँ, सम्मेलन प्रायोजन और अन्य लाभ—कुछ चिकित्सकों को अनैतिक व्यवहार की ओर आकर्षित कर रहे हैं। इन प्रोत्साहनों के प्रभाव में आकर जब चिकित्सक रोगी के सर्वोत्तम हित के बजाय व्यावसायिक लाभ को प्राथमिकता देने लगते हैं, तो यह चिकित्सा-नैतिकता के मूल सिद्धांतों का घोर उल्लंघन बन जाता है।

चिकित्सक का प्रथम कर्तव्य रोगी के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा करना है, न कि अधिक लाभकारी दवाओं को बढ़ावा देना। जब इस दायित्व की अनदेखी होती है, तब चिकित्सा पेशा अपनी गरिमा खोने लगता है और समाज का विश्वास डगमगाने लगता है।

इसके दुष्परिणाम: केवल एक रोगी नहीं, पूरी मानवता प्रभावित

महंगी और अत्यधिक शक्तिशाली एंटीबायोटिक्स के अनावश्यक उपयोग से एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) जैसी घातक समस्या जन्म लेती है, जिसमें बैक्टीरिया दवाओं के प्रति प्रतिरोधक हो जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में साधारण संक्रमण भी जानलेवा बन सकते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन पहले ही चेतावनी दे चुका है कि यदि इस प्रवृत्ति पर शीघ्र नियंत्रण नहीं किया गया, तो आने वाले वर्षों में एंटीबायोटिक-प्रतिरोध एक वैश्विक महामारी का रूप ले सकता है।

इसके अतिरिक्त, रोगियों को अनावश्यक दुष्प्रभावों, लंबे उपचार काल और बढ़ते चिकित्सा खर्चों का सामना करना पड़ता है, जो विशेष रूप से गरीब और मध्यम वर्ग के लिए विनाशकारी सिद्ध होता है।

समाधान की दिशा:

नैतिकता, जागरूकता और सख्त नियमन

इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है कि:

चिकित्सकों में नैतिक मूल्यों और उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ किया जाए।

फार्मास्यूटिकल कंपनियों और डॉक्टरों के बीच संबंधों में पारदर्शिता और कड़ा नियमन लागू किया जाए।

सरकारें और स्वास्थ्य संस्थाएँ एंटीबायोटिक स्टूअर्डशिप कार्यक्रमों को सख्ती से लागू करें।

रोगियों को भी यह समझाया जाए कि हर बीमारी में महंगी दवा ही बेहतर इलाज नहीं होती।

निष्कर्ष

मानव जीवन से बढ़कर कोई भी व्यावसायिक लाभ नहीं हो सकता। सस्ती और प्रभावी दवाओं की उपेक्षा कर केवल लाभ के लिए महंगी एंटीबायोटिक्स लिखना न केवल अनैतिक है, बल्कि यह मानवता के भविष्य के साथ खिलवाड़ भी है। समय आ गया है कि चिकित्सा-व्यवस्था आत्ममंथन करे और लाभ के बजाय जीवन-रक्षा को अपना सर्वोच्च उद्देश्य।

राजधानी में 1200 करोड़ में बनेंगी नई सड़कें

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार अगले वित्त वर्ष में सड़कों के सुधार पर 1200 करोड़ रुपये खर्च करेगी, जिससे 600 किलोमीटर नई सड़कें बनेंगी। लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने बताया कि केंद्रीय बजट में शहरी ढांचागत विकास पर जोर है, जिसका दिल्ली लाभ उठाएगी। केंद्र से 1200 करोड़ की सहायता राशि प्राप्त करने के प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने केंद्र-दिल्ली समन्वय और भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति पर भी प्रकाश डाला।

नईदिल्ली। दिल्ली में सड़कों की दशा सुधारने के लिए अगले वित्त वर्ष में दिल्ली सरकार 1200 करोड़ रुपये खर्च करेगी। इस राशि से 600 किलोमीटर लंबी नई सड़कें बनाई जाएंगी।

केंद्र और दिल्ली सरकार के बीच बढ़ा है समन्वय

लोक निर्माण मंत्री प्रवेश वर्मा ने मंगलवार को कहा कि केंद्रीय बजट में शहर के ढांचागत विकास और सड़कों के विकास पर फोकस किया गया है। दिल्ली सरकार इसका पूरा लाभ उठाने की कोशिश करेगी।

दिल्ली सरकार बड़े स्तर पर सड़कों के सुदृढ़ीकरण और विस्तार कार्य के लिए केंद्र सरकार से 1,200 करोड़ की इस केंद्रीय सहायता राशि को प्राप्त करने की दिशा में जल्द से जल्द प्रयास करेगी।

जबकि चालू वित्त वर्ष में पीडब्ल्यूडी को सड़क विकास के लिए 805 करोड़ रुपये मिले हैं, इन्हें हर हाल में 31 मार्च तक खर्च किया जाएगा। केंद्रीय बजट 2026–27 को नेक्स्ट जेनरेशन बजट बताते हुए उन्होंने कहा कि यह बजट भारत की आर्थिक नींव को और मजबूत करने के साथ दिल्ली के विकास को नई रफ्तार देगा।

केंद्र और दिल्ली सरकार के बीच बढ़ा है समन्वय

उन्होंने प्रेसवार्ता कर कहा कि राष्ट्रीय राजधानी होने के कारण अब केंद्र और दिल्ली सरकार के बीच बेहतर समन्वय से परियोजनाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं और कई वर्षों से लंबित इंफ्रास्ट्रक्चर कार्य अब पूरी गति से पूरे हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में भारत आज एक विश्वसनीय वैश्विक आर्थिक शक्ति बनकर उभरा है जिसका प्रमाण अंतरराष्ट्रीय व्यापार फैसलों और निवेशकों के बढ़ते भरोसे में साफ दिखाई देता है।

अमेरिका का टैरिफ कम करना बड़ी उपलब्धि

अमेरिका द्वारा भारतीय उत्पादों पर टैरिफ घटाकर 18 प्रतिशत किए जाने के फैसले का उल्लेख करते हुए वर्मा ने इसे भारत के लिए बड़ी आर्थिक उपलब्धि बताया और कहा कि यह दुनिया के भारत की मजबूती, स्थिरता और विकास क्षमता पर बढ़ते विश्वास को दर्शाता है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : साइबर मोड — पुलिसिंग की नई धड़कन

पिंकी कुंडू

भारत में पुलिसिंग सभी थानों में साइबर मोड को अपनाने के साथ एक परिवर्तनकारी बदलाव से गुजर रही है। यह आधुनिकीकरण पारंपरिक कागज़ी प्रणाली से डिजिटल-प्रथम कार्यप्रवाह की ओर एक निर्णायक कदम है, जो तेज़ प्रतिक्रिया, बेहतर जवाबदेही और मज़बूत सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित करता है।

पृष्ठभूमि

- ऐतिहासिक रूप से बीट पुलिसिंग हाथ से लिखी गई एफआईआर, रजिस्टर और भौतिक मुखबिर नेटवर्क पर आधारित थी।
- ऐप्स, सीसीटीवी एकीकरण और डिजिटल ई-बीटबुक्स के उदय ने अपराध की निगरानी, बीट गश्त और नागरिकों से संवाद करने के तरीकों को बदल दिया है। नए आपराधिक संहिता को अपनाने में भी ऐप्स महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।
- सोशल मीडिया और अंतरराज्यीय डेटाबेस अब पारंपरिक खुफिया तंत्र को पूरक करते हैं, जिससे वास्तविक समय में सत्यापन और पृष्ठभूमि जांच संभव हो पाती है।

साइबर मोड की प्रमुख विशेषताएँ

- डिजिटल बीट बुक्सः अधिकारी मोबाइल ऐप्स के माध्यम से दौरे, निरीक्षण और संवाद दर्ज करते हैं।
- सीसीटीवी एकीकरणः निगरानी फुटेज थानों के बीच सहज रूप से साझा की जाती है ताकि समन्वित निगरानी हो सके।
- ऑनलाइन सामुदायिक सहभागिताः सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग जनसंपर्क, सत्यापन और जागरूकता अभियानों के लिए किया जाता है।
- डेटा-आधारित पुलिसिंगः अपराध पैटर्न और गतिशीलता को डिजिटल रूप से ट्रैक किया जाता है, जिससे कागज़ी काम कम होता है और दक्षता बढ़ती है।
- विस्तारित कार्यबलः जनसंख्या वृद्धि और बदलते अपराध रुझानों के अनुसार प्रति बीट अधिक अधिकारियों की तैनाती की जाती है।

लाभ

- दक्षताः नियमित कार्य तेज़ी से पूरे होते हैं, जिससे अधिकारी महत्वपूर्ण कर्तव्यों के लिए मुक्त होते हैं।
- पारदर्शिताः डिजिटल रिकॉर्ड हेरफेर की संभावना को कम करते हैं और जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं।
- सामुदायिक विश्वासः ऑनलाइन सहभागिता निवासियों और कल्याणकारी संस्थाओं के साथ संबंधों को मज़बूत करती है।
- त्वरित प्रतिक्रियाः स्थानीय ज्ञान और डिजिटल इंटेलिजेंस का संयोजन संकट प्रबंधन को तेज़ बनाता है।

डिजिटल प्रक्रियाएँ नियमित कार्यों को तेज़ बना देती हैं।

भविष्य की दृष्टि

- आने वाले कुछ वर्षों में, देशभर के सभी थाने साइबर मोड में काम करेंगे, जिससे तकनीक-आधारित कानून प्रवर्तन का मानक स्थापित होगा।
- यह परिवर्तन भारतीय पुलिसिंग को फॉरेंसिक - आधारित न्याय वितरण और नागरिक सशक्तिकरण का मॉडल बनाने की दिशा में अग्रसर करेगा।
- आइए, पुलिसिंग को वास्तव में साइबर पुलिसिंग बनाने में अपना योगदान दें।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (AMR) - एक उभरता वैश्विक संकट

पिंकी कुंडू

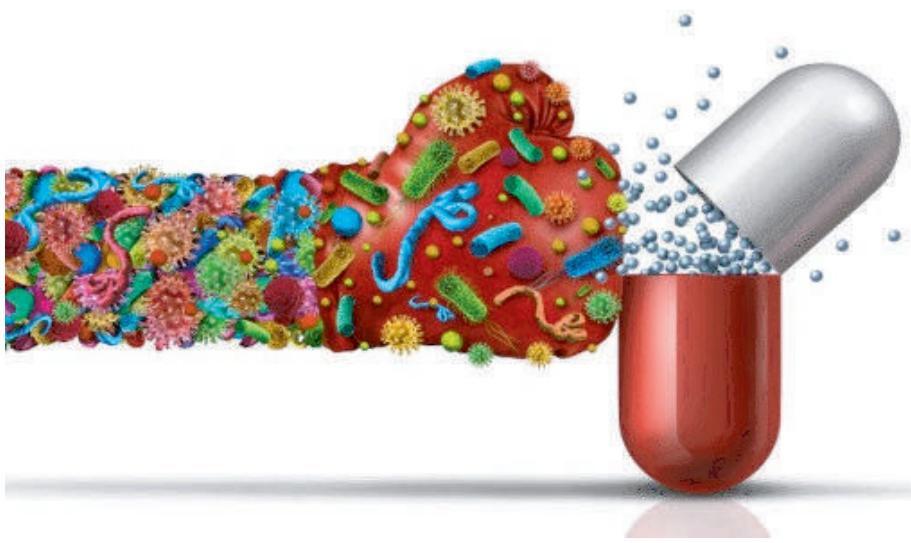

एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (AMR) क्या है? एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (AMR) वह स्थिति है जब सूक्ष्मजीव — जैसे बैक्टीरिया, वायरस, फंगस या परजीवी — समय के साथ इस प्रकार विकसित (mutate) हो जाते हैं कि उन्हें मारने या रोकने वाली दवाएँ अब प्रभावी नहीं रहतीं।

* जिन दवाओं से पहले संक्रमण ठीक हो जाता था, वही दवाएँ अब बेअसर हो जाती हैं।

* ऐसे प्रतिरोधी जीवों को आम भाषा में "सुपरबग्स" कहा जाता है।

एंटीमाइक्रोबियल दवाओं में शामिल हैं:

* एंटीबायोटिक्स (बैक्टीरिया के लिए)
* एंटीवायरल (वायरस के लिए)
* एंटीफंगल (फंगस के लिए)
* एंटीपैरासाइटिक (परजीवियों के लिए)

AMR क्यों 21वीं सदी का सबसे बड़ा स्वास्थ्य खतरा माना जा रहा है?

1. संक्रमणों का इलाज अत्यंत कठिन या असंभव जब प्रतिरोध बढ़ता है:

* निमोनिया, टीबी, मूत्र संक्रमण (UTI), सेप्सिस जैसे सामान्य रोग लंबे, जटिल और जानलेवा बन जाते हैं।
* सर्जरी, कैंसर की कीमोथेरेपी, अंग प्रत्यारोपण जैसे आधुनिक उपचार बेहद जोखिमपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि ये सभी प्रभावी एंटीबायोटिक्स पर निर्भर करते हैं।
* आधुनिक चिकित्सा की नींव ही हिल जाती है।

2. वैश्विक स्तर पर भयावह आँकड़े, WHO की नवीनतम रिपोर्टों के अनुसार:

* दुनिया में हर 6 में से 1 बैक्टीरियल संक्रमण अब सामान्य एंटीबायोटिक्स से ठीक नहीं होता।
* दक्षिण-पूर्व एशिया और पूर्वी भूमध्य क्षेत्र में हर 3 में से 1 संक्रमण प्रतिरोधी हो सकता है।
* E. coli और Klebsiella pneumoniae जैसे बैक्टीरिया अब "अंतिम विकल्प" मानी जाने वाली दवाओं (जैसे कार्बापेनेम्स) से भी नहीं मर रहे।

3. मानव जीवन और अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव हर साल 10 लाख से अधिक मौतें सीधे AMR से जुड़ी हैं। आने वाले दशकों में:

* वैश्विक अर्थव्यवस्था को खरबों डॉलर का नुकसान
* स्वास्थ्य खर्च में भारी वृद्धि
* उत्पादकता में गिरावट और गरीबी में इज़ाफ़ा

AMR के प्रमुख कारण (Drivers of Resistance)

1. दवाओं का दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग

* बिना डॉक्टर की सलाह एंटीबायोटिक लेना
* पूरा कोर्स न करना
* वायरल रोगों (जुकाम, फ्लू) में एंटीबायोटिक्स लेना
* पशुपालन और कृषि में नियमित एंटीबायोटिक प्रयोग
* इससे बैक्टीरिया "सीख" जाते हैं कि दवाओं से कैसे बचना है।

2. संक्रमण नियंत्रण की कमजोरी

* स्वच्छता और साफ़ पानी की कमी
* अस्पतालों में संक्रमण नियंत्रण के कमजोर उपाय

3. तेज़ और सटीक जांच की कमी सही टेस्ट न होने से डॉक्टर "एहतियातन" शक्तिशाली दवाएँ दे देते हैं, जो प्रतिरोध को और बढ़ाता है।

AMR में नवीनतम वैज्ञानिक और वैश्विक विकास

1. वैश्विक निगरानी: बढ़ता खतरा

WHO की Global AMR Surveillance Report 2025 के अनुसार:

* प्रमुख बैक्टीरिया में प्रतिरोध तेज़ी से बढ़ रहा है।
* कई देशों में अब भी AMR डेटा संग्रह और साझा करने की मजबूत व्यवस्था नहीं है।

2. विज्ञान और तकनीक से नई उम्मीद AI और नई दवाओं की खोज, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) और डीप लर्निंग की मदद से:

* नई एंटीबायोटिक दवाएँ तेज़ी से डिज़ाइन की जा रही हैं। ऐसी दवाएँ जो सुपरबग्स पर भी असर करें।

प्रतिरोध का पूर्वानुमान (Forecasting) मशीन लर्निंग मॉडल यह अनुमान लगा रहे हैं कि:

* बैक्टीरिया भविष्य में कैसे बदलेंगे
* कौन-सी दवा कब तक प्रभावी रहेगी

नई उपचार रणनीतियाँ Sequential Therapy जैसी तकनीकें:

* बैक्टीरिया की कमजोरी का फायदा उठाकर
* प्रतिरोध को दबाने या खत्म करने की कोशिश

3. नीति और जागरूकता कई देशों ने राष्ट्रीय AMR एक्शन प्लान मज़बूत किए हैं:

* जिम्मेदार एंटीबायोटिक उपयोग
* बेहतर स्वच्छता और टीकाकरण

नई जांच तकनीक और वैक्सीन पर निवेश भारत में भी AMR को गंभीर राष्ट्रीय चुनौती माना जा रहा है, और एंटीबायोटिक स्टूअर्डशिप पर ज़ोर बढ़ रहा है।

संक्षेप में (Conclusion) एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस (AMR) केवल एक चिकित्सीय समस्या नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए चेतावनी है। यह आधुनिक चिकित्सा को कमजोर करता है, लाखों जानें लेता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में डाल सकता है।

हालाँकि:

* वैज्ञानिक नवाचार,
* AI - आधारित दवा खोज,
* बेहतर निगरानी और वैश्विक सहयोग

इन सबके माध्यम से हम AMR की गति को धीमा कर सकते हैं और भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं — बशर्ते हम आज जिम्मेदारी से कार्य करें।

तम्बाकू कितनी खतरनाक: इस सच को उजागर करते कुछ सुभाषित

– डॉ. श्रीधर द्विवेदी
(वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली)

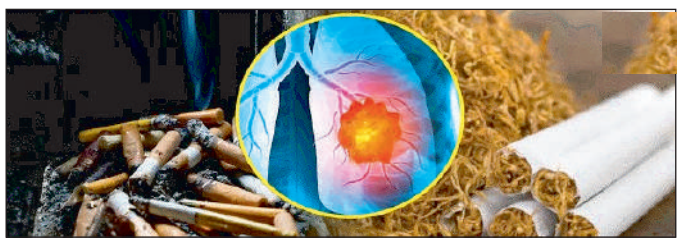

1. तम्बाकू कैंसर कारक है, हृदय विदारक है
2. तम्बाकू खाना मौत बुलाना
3. धूम्रपान अग्निपान, धूम्रपान विषपान, अनेक रोगों की खान, मृत्युदण्ड धूम्रपान।
4. गुल करती है, आपकी सेहत की बिजली गुल, करती है कैंसर, मसूड़े, दाँत बर्बाद, खिलाए कई गुल।
5. तम्बाकू की लत, सेहत दुर्गत
6. त्यागिये तम्बाकू, बचाइये अपना तन
7. तम्बाकू का स्पर्श भी पाप है
8. तम्बाकू में तम ही तम है, क्रूर कुसंग व्याल विषम है।
9. तम्बाकू–सुपारी का प्रयोग, कैंसर व हृदयाघात का रोग।
10. तम्बाकू कैंसर देती है, हार्ट अटैक प्राण लेती है
11. तम्बाकू से कैसी यारी, जो देती इतनी बीमारी
12. तम्बाकू हर हाल में खतरनाक, देती कैंसर, खों खों, करती है खाक।
13. तम्बाकू मौखिक हो या धूम्रपान, मचाती शरीर में घमासान।
14. तम्बाकू की आदत, लानत और मलामत, न रक्खे कभी सलामत।
15. हुक्का दिल का जाम चक्का
16. त्यागिए धूम्रपान, बचाईये अपनी जान
17. तम्बाकू और सुपारी, मुंह के कैंसर के लिए सुपारी
18. सुपारी सेहत के लिए भारी
19. तम्बाकू -सुपारी का कुयोग, कैंसर हृदयाघात का रोग
20. तम्बाकू की आदत, कैंसर को दावत
21. पहले तम्बाकू का मज़ा, फिर मिली सजा
22. मौत छिपी है तम्बाकू के वेश में

ताकत का खजाना दिव्य अनुभूत

पिंकी कुंडू

कायाकल्प मोदक -

* बाल हरड़ का चूर्ण 250 ग्राम,
* बहेड़ा के छिलका का चूर्ण 250 ग्राम,
* आँवला का चूर्ण 250 ग्राम।

सब औषधियों को मिलाकर ऊपर से 750 ग्राम खांड मिलाकर अच्छा मिश्रण बना लें

बन गया आपका दिव्य कायाकल्प मोदक।

सुबह - शाम भोजन के बाद एक - एक चम्मच यानि पांच - पांच ग्राम सादे जल के साथ खिलाएं।

इस दिव्य कायाकल्प मोदक के प्रयोग से

* समस्त रोग दूर हो जाते हैं।
* शारीरिक कमजोरी दूर होती है।
* दिल दिमाग मजबूत होते हैं।
* छह माह में यौवन लौट आता है।

बाइल (एसिडिटी) असल में क्या है?

पिंकी कुंडू

बाइल को समझें – और इसे हमेशा कंट्रोल में रखें! आजकल, आपको शायद ही कोई ऐसा इंसान मिलेगा जिसे एसिडिटी न हो! लेकिन यह समझना बहुत ज़रूरी है कि यह एसिडिटी क्यों होती है।

हमारे खाने को पचाने के लिए, पेट ये डाइजेस्टिव सेक्रिशन बनाता है:

1. हाइड्रोक्लोरिक एसिड
2. पेप्सिन
3. गैसट्रिन

जब यह रेश्यो बढ़ता है = बाइल / एसिडिटी खराब डाइट, स्ट्रेस, दौड़ना, जागना बाइल को बढ़ाता है।

बाइल बढ़ने के कारण (ज़रूर पढ़ें)

1. जल्दी में खाना बिना चबाए खाना निगलने से डाइजेशन खराब होता है, गैस बनती है और बाइल बढ़ता है। जैसे कपड़े बैग में मोड़ने पर उनमें सिलवटें पड़ जाती हैं, वैसे ही पेट के साथ भी होता है!

2. खाने के तुरंत बाद सो जाना खाना और एसिड ऊपर आना, खट्टी डकारें आना, गले में जलन होना। डिनर के कम से कम 2 घंटे बाद सोएं

3. बाइल बढ़ाने वाले फूड्स
1. दही (ज़्यादा मात्रा में)
2. हरी मिर्च
3. नॉन-वेजिटेरियन खाना, अंडे
4. मैदा, बेकरी प्रोडक्ट्स
5. चाय, कॉफी
6. फास्ट फूड
7. तंबाकू, शराब, सुपारी
8. बेसन, उड़द दाल वाले फूड्स

4. बहुत मीठे फूड्स मीठे फूड्स पचाने में मुश्किल होते हैं एसिड बढ़ता है।

5. तीखा और मसालेदार खाना "बराबर बढ़ता है बराबर" पित्त वाले लोगों को सावधान रहना चाहिए

6. अनियमित नींद
1. जागना
2. जागना देर से
3. दोपहर की नींद

4. डाइजेशन धीमा हो जाता है पित्त बढ़ जाता है

7. खाते समय बहुत ज़्यादा पानी डाइजेस्टिव जूस पतले हो जाते हैं खाना पचता नहीं है पित्त

8. ज़्यादा खाना पेट में खिंचाव एसिडिटी पक्की

बाइल कम करने वाली डाइट

डेली डाइट:

* 2/3 एल्कलाइन फूड्स
* 1/3 एसिडिक फूड्स

फायदेमंद फूड्स

* फल
* हरी पत्तेदार सब्जियां
* छाछ
* पत्तागोभी
* बादाम, पिस्ता
* मूंग दाल तोड़ी हुई
* गाय का घी (कम मात्रा में)

घरेलू नुस्खे (अगर हल्की प्रॉब्लम हो)

* करेले का जूस
* आंवला जूस
* अदरक का जूस
* त्रिफला पाउडर + रात में 2 गिलास गर्म पानी

लेकिन याद रखें – ये टेम्परेरी उपाय हैं। असली सॉल्यूशन = डाइट + रूटीन में सुधार*

बाइल कम करने वाला रूटीन

* खाने के बाद 10–15 मिनट के लिए वज्रासन
* फिर शतपावली (वॉकिंग)
* डेली एक्सरसाइज – वॉकिंग, साइकिलिंग, योग, सूर्य नमस्कार
* डाइजेशन के लिए – पवनमुक्तासन, भुजंगासन (एक्सपर्ट की गाइडेंस में)

आदतें जो एसिडिटी बढ़ाती हैं

* फ्रिज से बार-बार गर्म किया हुआ खाना
* चाय-कॉफी की लत
* बाहर का ऑयली खाना खाना
* तंबाकू / शराब
* कच्चा प्याज-लहसुन (अगर आप (ज़्यादा बाइल है, तो उसे पकाएँ)

याद रखें बाइल कोई बीमारी नहीं है

* यह गलत लाइफस्टाइल की चेतावनी है, दवाओं के बजाय
* सही डाइट
* सही नींद
* एक्सरसाइज़
* शांत मन

यही असली सॉल्यूशन है!

ओरेगैनो तेल — मुख्य बातें

ओरेगैनो तेल क्या है? ओरेगैनो एक औषधीय पौधा है और इसके तेल में कार्वाक्रोल, थाइमोल और एंटीऑक्सिडेंट जैसे सक्रिय घटक मौजूद हैं। ये प्राकृतिक रूप से जीवाणुरोधी, कवकरोधी और सूजन-रोधी गुण रखते हैं।

उपयोग और फायदे

* दर्द से राहत ओरेगैनो तेल में मौजूद सक्रिय यौगिक हल्की दर्द-निरोधी और सूजन कम करने वाली क्षमताएँ प्रदान कर सकते हैं।
* संक्रमण और घाव उपचार इसमें एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण होते हैं — जो छोटे घावों, कट-छरों या त्वचा संक्रमणों में मदद कर सकते हैं जब इसे सही तरीके से उपयोग किया जाए।
* रोग-प्रतिरोधक क्षमता समर्थन तेल के एंटीऑक्सिडेंट कम्पाउंड स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली को समर्थन दे सकते हैं।
* प्राकृतिक उपयोग (अत्यधिक सूक्ष्म स्तर) – घर में प्राकृतिक सैनिटाइज़र के रूप में
* – सांस के संक्रमण के लक्षणों में आराम

सावधानियाँ (जरूरी)

* त्वचा पर सीधे न लगाएं: केवल वाहक तेल (जैसे नारियल या जैतून) में मिलाकर पतला करें — नहीं तो जलन हो सकती है।

* आंतरिक उपयोग: सीधे जरूरी तेल न पिएं — यदि लेने की सोची भी है तो कैप्सूल/निर्दिष्ट सप्लीमेंट रूप में और डॉक्टर की सलाह से।

*** सभी के लिए सुरक्षित नहीं:**

* – गर्भवती या स्तनपान कराने वाली महिलाएँ ध्यान रखें
* – बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं
* – दवा के साथ संभावित इंटरैक्शन हो सकते हैं
* – कुछ लोगों को एलर्जी-जैसी प्रतिक्रिया हो सकती है

उपयोग के सुरक्षित तरीके

* टॉपिकल (त्वचा पर): 1 बूंद ओरेगैनो तेल + 4-5 बूंद वाहक तेल प्रभावित क्षेत्र पर हल्का मसाज करें।
* इन्हेलेशन/स्टीम: 2-3 ड्रॉप गर्म पानी में मिलाकर भाप लें।
* कैप्सूल/सप्लीमेंट: निर्माता की डोज़ का अनुसरण करें, डॉक्टर की सलाह लें।

डायबिटीज – एक शांत लेकिन जानलेवा बीमारी

पिंकी कुंडू

आज, भारत में लाखों लोग डायबिटीज से परेशान है, लेकिन बदकिस्मती से, ज़्यादातर लोग समय रहते इसके असली खतरों को नहीं समझ पाते।

डायबिटीज सिर्फ़ शुगर बढ़ने के बारे में नहीं है यह धीरे-धीरे शरीर को अंदर से नुकसान पहुँचाता है

डायबिटीज से होने वाले खतरे:

1. किडनी कमज़ोर होना / फेल होना
2. आँखों की रोशनी कम होना
3. पैरों में झुनझुनी, घाव का न भरना
4. दिल की बीमारी का खतरा
5. पुरुषों में कमज़ोरी / नामर्दी
6. लगातार थकान, चिड़चिड़ापन, स्ट्रेस

बहुत से लोग सालों तक सिर्फ़ गोलियाँ लेते रहते हैं, लेकिन असली वजह पर ध्यान नहीं देते।

डायबिटीज़ कंट्रोल करने के लिए क्या ज़रूरी है?

1. सही डाइट
2. रेगुलर वॉकिंग / एक्सरसाइज़
3. स्ट्रेस कम करना

आयुर्वेदिक तरीका जो शरीर के नेचुरल प्रोसेस को सपोर्ट करता है

* रेगुलर और सब्र
* सिर्फ़ शुगर कम करना नहीं,
* शरीर को बेहतर बनाने पर फोकस होना चाहिए।

आयुर्वेदिक तरीकों से कई लोगों ने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए हैं।

डॉक्टर से सलाह लिए बिना कोई भी दवा बंद न करें। हमारी बस यही रिक्वेस्ट है:

* पहले जानकारी लें
* एक्सपीरियंस और रिज़ल्ट देखें
* उसके बाद ही फैसला करे।

अगर आपको डायबिटीज के बारे में सही जानकारी मिल जाए, तो रिस्क ज़रूर कम हो सकता है।

आज ही अपनी हेल्थ की ज़िम्मेदारी लें। हेल्थ ही वेल्थ का असली बेस है।

एक चेतावनी जिसे डायबिटीज वाले हर व्यक्ति को पढ़ना चाहिए!

क्या आप जानते हैं — डायबिटीज सिर्फ "बढ़ी हुई शुगर" की बीमारी नहीं है यह धीरे-धीरे शरीर के अंदरूनी हिस्से को नुकसान पहुंचाती है!

1. पैंक्रियास कमज़ोर हो जाता है
2. इंसुलिन बनना कम हो जाता है
3. खून गाढ़ा हो जाता है
4. नसों में सूजन और ब्लॉकेज बढ़ जाती है

और फिर ये खतरनाक संकेत शुरू होते हैं

1. बार-बार भूख लगना
2. रात में पेशाब आना
3. कमज़ोरी, चक्कर आना
4. हाथ-पैरों में सुन्नपन, झुनझुनी
5. नींद न आना
6. चिड़चिड़ापन, डिप्रेशन
7. सेक्सुअल कमज़ोरी
8. बेकाबू वज़न बढ़ना
9. घाव ठीक नहीं होते

अगर इन सब बातों को नज़र अंदाज़ किया गया तो आगे क्या होगा?

1. किडनी डैमेज
2. आंख का नुकसान
3. हार्ट ब्लॉकेज
4. ज़िंदगी भर के लिए गोलियां और इंसुलिन

लेकिन आयुर्वेद एक अलग रास्ता दिखाता है जंगली पौधों से तैयार कुछ आयुर्वेदिक फ़ॉर्मूले

1. सीधे पैंक्रियास को पोषण देने का काम करते हैं
2. अल्फ़ा, बीटा, डेल्टा सेल्स पर काम करते हैं
3. शरीर में इंसुलिन बनने के नैचुरल प्रोसेस को ठीक करते हैं
4. खून में गंदगी और फैट कम करने में मदद करते हैं

* इसका नतीजा क्या होता है?
* शरीर अंदर से मज़बूत होने लगता है
* शुगर से होने वाली दिक्कतें धीरे-धीरे कम हो सकती हैं
* भविष्य में BP, कोलेस्ट्रॉल जैसी दिक्कतों को रोकने में मदद मिल सकती है

ज़रूरी बात याद रखें डायबिटीज़ "दिखाई नहीं देती" लेकिन यह चुपचाप शरीर को खत्म कर देती है। अगर समय रहते असली वजह पर काम न किया जाए, तो इलाज मुश्किल और परेशानी भरा हो जाता है।

इसीलिए आज हज़ारों लोग "सिर्फ़ शुगर कम करने के बजाय — शरीर को रिपेयर करने" का तरीका ढूंढ रहे हैं।

कृपया यह जानकारी हर डायबिटीज़ वाले व्यक्ति तक पहुंचाएं क्योंकि एक सही जानकारी किसी की ज़िंदगी बदल सकती है।

भगवान विष्णु ने मारा था शुक्राचार्य की माँ को, बदले की भावना में बने दैत्यगुरु !

पिंकी कुंडू

शुक्राचार्य का नाम तो सबने सुना ही होगा, इतना सबको पता है की वो दैत्यों और राक्षसो के गुरु थे लेकिन ये कोई नही जानता होगा की वो कौन थे कहां से आये थे. आपको बताते है उनके ऋषि से दैत्यगुरु होने की कथा.

संत भृगु जिन्होंने अपनी होने वाली पत्नी को अपनी आधी उम्र देके फिर जीवित किया !

नवग्रहों में शुमार शुक्र ही शुक्राचार्य है, शुक्राचार्य ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ भृगु ऋषि के पुत्र है भृगुऋषि जिन्हे धरती के सब ऋषियों ने तीनो देवो (ब्रह्मा विष्णु महेश) में कौन सर्वश्रेष्ठ है जांचने की जिम्मेदारी, ऐसे प्रतापि ऋषि का पुत्र होके भी शुक्राचार्य दैत्यों के गुरु कैसे बन गए.

बाद बहुत पुरानी है भृगु ऋषि की दो पत्निया थी पहली दक्ष की कन्या थी और दूसरी थी ख्याति जिनसे उन्हें पुत्र मिला शुक्राचार्य. उनके नाम पे ही शुक्र का नाम शुक्रवार पड़ा, पिता ने उन्हें ब्रह्मऋषि अंगिरा के पास शिक्षा के लिए भेजा.

गर्भवती माँ का राक्षस ने किया उत्पीड़न तो समय से पहले पैदा हुए च्यवन ! अंगरीशी ब्रह्मा के मानस पुत्रो में सर्वश्रेष्ठ थे, शुक्राचार्य के साथ उनके पुत्र बृहस्पति (जो बाद में देवो के गुरु बने) भी पढ़ते थे.

शुक्राचार्य बृहस्पति की तुलना में काफी होशियार थे, लेकिन फिर भी बृहस्पति को पुत्र होने के चलते शुक्र को ज्यादा अच्छी तरह से शिक्षा नही मिली. ईर्ष्या वश वो वहा से दीक्षा छोड़ के सनक ऋषियों और गौतम ऋषि से शिक्षा लेने लगे.

इस दौरान उन्हें प्रेरणा मिली और जब बृहस्पति देवो के गुरु बने तो ईर्ष्या वष वो दैत्यों के गुरु बने. दैत्य देवो से नित हारते थे इसलिए उन्होंने (शुक्राचार्य) शिव को प्रसन्न कर संजीवनी मन्त्र (मरे हुए को जीवित करने का मन्त्र) हेतु तपस्या में बैठ गए. लेकिन देवो ने मौके का फायदा उठा के दैत्यों का संघार आरम्भ कर दिया, शुक्राचार्य को तपस्या में जान दैत्य उनकी माता ख्याति की शरण में चले गए. ख्याति ने दैत्यों को शरण दी और जो भी देवता दैत्यों को मारने आता वो उसे मूर्छित कर देती या अपनी शक्ति से लकवाग्रस्त.

ऐसे में दैत्य बलशाली हो गए और धरती पर पाप बढ़ने लगा, धरती पे धर्म की स्थापना के लिए भगवान विष्णु ने शुक्राचार्य की माँ और भृगु ऋषि की पत्नी ख्याति का सुदर्शन चक्र से सर काट दैत्यों के संघार में देवो की और समूचे जगत की मदद की. शुक्राचार्य को बेहद खेद हुआ और वो शिव की तपस्या में और कड़ाई से लग गए

आखिर कार उन्होंने संजीवनी मन्त्र पाया और दैत्यों के राज्य को पुनः स्थापित कर अपनी माँ का बदला लिया, तब से शुक्राचार्य का भगवान विष्णु से छत्तीस का आंकड़ा हो गया और वो उनके शत्रु बन गए. भृगु ऋषि ने भगवान विष्णु को इस पर श्राप दिया की तुम्हे बार बार पृथ्वी में जाके गर्भ में रह कष्ट भोगना पड़ेगा चूँकि उन्होंने एक स्त्री का वध किया.

उससे पहले भगवान प्रकट हो के ही अवतार लेते थे जैसे की वराह, मतस्य, कुर्मा और नरसिंघ लेकिन उसके बाद उन्होंने परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध रूप में जन्म लिया तो माँ के पेट में कोख में रहने की पीड़ा झेलनी पड़ी थी !

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुंदरीयै नमः

पिंकी कुंडू

मां ललिता प्राकट्योत्सव का पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष को मनाया जाता है, इस दिन मां ललिता की पूजा की जाती है। इस दिन मां ललिता के साथ ही स्कंदमाता और भगवान शंकर की पूजा भी की जाती है। माता ललिता को राजेश्वरी, षोडशी, त्रिपुरा सुंदरी आदि नामों से भी जाना जाता है।

इस दिन माँ के मन्त्र ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुंदरीयै नमः का जाप करना चाहिये।

पशुपतिनाथ मंदिर मे नंदी के दर्शन नही करना चाहिए, आइये जानते है क्यो ?

पिंकी कुंडू

भारत सहित पूरी दुनिया में भोलेनाथ के सैकड़ो मंदिर और तीर्थ स्थान मौजूद है जो अपने चमत्कारों और धार्मिकता के कारण विश्व प्रसिद्ध है।

वैसे तो भोलेनाथ के अनेको नाम है, उन्ही में से एक नाम है पशुपति मंदिर के बारें में कहा जाता है कि आज भी यहां पर भगवान शिव विराजमान है।

पशुपतिनाथ मंदिर नेपाल की राजधानी काठमांडू से 3 किमी उत्तर-पश्चिम देवपाटन गांव में बागमती नदी के तट पर स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव के पशुपति स्वरूप को समर्पित है। यूनेस्को विश्व सांस्कृतिक विरासत स्थल की सूची में शामिल भगवान पशुपतिनाथ का मंदिर नेपाल में शिव का सबसे पवित्र मंदिर माना जाता है। यह मंदिर हिन्दू धर्म के आठ सबसे पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। नेपाल में यह भगवान शिव का सबसे पवित्र मंदिर है।

जानिए इस मंदिर से जुड़े कुछ रहस्यों के बारें में। जिन्हें जानकर आप आश्चर्य चकित हो जाएगे

1. भगवान शिव के पशुपति स्वरूप को समर्पित इस मंदिर में दर्शन के लिए हर साल हजारों संख्या में भक्त यहां पर आते है। इस मंदिर में भारतीय पुजारियों की सबसे अधिक संख्या है। सदियों से यह परंपरा चलती चली आ रही है कि मंदिर में चार पुजारी और एक मुख्य पुजारी दक्षिण भारत के ब्राह्मणों में से रखे जाते हैं।

2. पशुपति मंदिर को 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ का आधा भाग माना जाता है। जिसके कारण इस मंदिर का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। साथ ही शक्ति और बढ़ जाती है।

3. इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग के पांचो मुखों के गुण अलग - अलग हैं। जो मुख

* दक्षिण की और है उसे अघोर मुख कहा जाता है,
* पश्चिम की ओर मुख को सद्योजात,
* पूर्व और उत्तर की ओर मुख को तत्वपुरुष और अर्धनारीश्वर कहा जाता है।
* जो मुख ऊपर की ओर है उसे ईशान मुख कहा जाता है। यह निराकार मुख है।
* यही भगवान पशुपतिनाथ का श्रेष्ठतम मुख है।

4. यह शिवलिंग बहुत ही कीमती और चमत्कारी है। माना जाता है कि यह शिवलिंग पारस के पत्थर से बना है। पारस का पत्थर ऐसा होता है कि लोह को भी सोना बना देता है।

5. पशुपति मंदिर में चारों दिशाओं में एक मुख और एक मुख ऊपर की और है। हर मुख के दाएं हाथ में रुद्राक्ष की माला और बाएं हाथ में कमंडल मौजूद है।

6. इस मंदिर में बाबा का प्रकट होने के पीछे भी पौराणिक कथा है। इसके अनुसार जब महाभारत के युद्ध में पांडवों द्वारा अपने ही रिश्तेदारों का रक्त बहाया गया तब भगवान शिव उनसे बेहद क्रोधित हो गए थे। श्रीकृष्ण के कहने पर वे भगवान शिव से मांफी मांगने के लिए निकल पड़े। गुप्त काशी में पांडवों को देखकर भगवान शिव वहां से विलुप्त होकर एक अन्य स्थान पर चले गए। आज इस स्थान को केदारनाथ के नाम से जाना जाता है।

7. शिव का पीछा करते हुए पांडव केदारनाथ भी पहुंच गए लेकिन भगवान शिव उनके आने से पहले ही भैंस का रूप लेकर वहां खड़े भैंसों के झुंड में शामिल हो गए। पांडवों ने महादेव को पहचान तो लिया लेकिन भगवान शिव भैंस के ही रूप में भूमि में समाने लगे। इस पर भीम ने अपनी ताकत के बल पर भैंस रूपी महादेव को गर्दन से पकड़कर धरती में समाने से रोक दिया। भगवान शिव को अपने असल रूप में आना पड़ा और फिर उन्होंने पांडवों को क्षमादान दे दिया। लेकिन भगवान शिव का मुख तो बाहर था लेकिन उनका देह केदारनाथ पहुंच गया था। जहां उनका देह पहुंचा वह स्थान केदारनाथ और उनके मुख वाले स्थान पशुपतिनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

8. इस मंदिर को लेकर मान्यता है कि अगर आपने पशुपति मंदिर के दर्शन किए तो पूरा पुण्य पाने के लिए आपको केदार मंदिर में भी भोले के दर्शन करने जाना पडेगा क्योंकि पशुपतिनाथ में भैंस के सिर और केदारनाथ में भैंस की पीठ के रूप में शिवलिंग की पूजा होती है।

9. पशुपति मंदिर को लेकर मान्यता है कि अगर कोई व्यक्ति यहां पर दर्शन के लिए आता है तो उसे किसी जन्म में पशु की योनि नहीं मिलती है।

10. इस मंदिर को लेकर एक दूसरी मान्यता यह भी है कि अगर आपने पशुपति के दर्शन किएं तो आप नंदी के दर्शन न करें, नहीं तो आपको दूसरे जन्म में पशु का जन्म मिलेगा। केदारनाथ जी के दर्शन करने के बाद अगर आपको नंदी दर्शन होता है, तो दोष नही लगता।

11. इस मंदिर के बाहर एक घाट बना हुआ है जिसे आर्य घाट के नाम से जाना जाता है। इस घाट के बारें में कहा जाता है कि सिर्फ इस घाटका ही पानी मंदिर के अंदर जाता है। और किसी जगह के पानी को ले जाना वर्जित है।

"शांति शोर की अनुपस्थिति नहीं है। यह आपके भीतर गहन शांत ज्ञान की उपस्थिति है"

अपने भीतर एक गहन, कालातीत और वैज्ञानिक रूप से प्रासंगिक सत्य समेटे हुए है। इसे केवल काव्यात्मक पंक्ति समझना इसके अर्थ को सीमित करना होगा; वास्तव में यह मनुष्य के मानसिक संतुलन, आत्मबोध और समग्र स्वास्थ्य का सूक्ष्म दर्शन प्रस्तुत करता है।

गहन अर्थ और दार्शनिक व्याख्या यह वाक्य हमें यह सिखाता है कि शांति बाहरी शोर के समाप्त होने का नाम नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी आंतरिक अवस्था है जो बाहरी अव्यवस्था के बीच भी स्थिर बनी रहती है।

आज का युग —

* निरंतर सूचनाओं की बौछार,
* डिजिटल शोर,
* सामाजिक दबाव,
* और अंतहीन मानसिक संवाद

से भरा हुआ है।

यदि हम शांति को केवल बाहरी मौन से जोड़ेंगे, तो वह सदैव अस्थायी और दुर्लभ रहेगी। इसके विपरीत, यह कथन शांति को आंतरिक प्रभुत्व (Inner Sovereignty) के रूप में परिभाषित करता है — एक ऐसा केंद्र जहाँ व्यक्ति स्वयं के प्रति स्पष्ट, आश्वस्त और संतुलित होता है।

"गहरा शांत बोध" (Deep Quiet Knowing) क्या है? यह "गहरा शांत बोध" उस अवस्था को दर्शाता है जहाँ:

विचारों का कोलाहल शांत हो जाता है,
भावनाएँ हमें नियंत्रित नहीं करतीं,
और व्यक्ति प्रतिक्रिया के बजाय उत्तर देना सीखता है।

यह कोई खालीपन नहीं है, बल्कि —
अर्थ, जागरूकता और आत्मविश्वास से भरी हुई शांति है।

भारतीय दर्शन में इसे साक्षी भाव, स्थिर बुद्धि या आत्मस्थित प्रज्ञा कहा गया है।

आधुनिक मनोविज्ञान इसे Self-regulation और Metacognitive Awareness के रूप में पहचानता है।

मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में महत्व, आधुनिक मनोविज्ञान क्या कहता है?

हालिया शोध (2024–2025) यह दर्शाते हैं कि:

* केवल बाहरी शांति पर निर्भर रहने से तनाव और निराशा बढ़ सकती है।
* इसके विपरीत, आंतरिक शांति का अभ्यास व्यक्ति को मानसिक रूप से अधिक लचीला (resilient) बनाता है।

लाभ:

* चिंता (Anxiety) और अवसाद (Depression) में कमी

*** भावनात्मक संतुलन में सुधार**

* ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ना
* आत्म-नियंत्रण और आत्म-करुणा का विकास

10 मिनट का नियमित ध्यान या माइंडफुलनेस अभ्यास भी मस्तिष्क के भावनात्मक केंद्रों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

आधुनिक चिकित्सा अब स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि:

मन की शांति, शरीर की सेहत की नींव है।

नवीन शोधों के अनुसार:

आंतरिक शांति से कॉर्टिसोल (तनाव हार्मोन) का स्तर घटता है
रक्तचाप और हृदय-स्वास्थ्य में सुधार होता है
नींद की गुणवत्ता बढ़ती है
प्रतिरक्षा प्रणाली सुदृढ़ होती है
दीर्घकालिक दर्द (Chronic Pain) की अनुभूति कम होती है

कुछ अध्ययनों में यह भी पाया गया है कि ध्यान अभ्यास मस्तिष्क की स्व - शुद्धिकरण प्रणाली (glymphatic system) को सक्रिय करता है, जो स्मृति और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

संतुलन का महत्व हालाँकि, हालिया शोध यह भी इंगित करते हैं कि:

* अत्यधिक या असंरचित आत्म-विश्लेषण कुछ लोगों में अस्थायी बेचैनी बढ़ा सकता है।

इसलिए मार्गदर्शन, संतुलन और धीरे-धीरे अभ्यास आवश्यक है।

सार और जीवनोपयोगी निष्कर्ष यह कथन हमें याद दिलाता है कि:

* शांति कोई परिस्थिति नहीं, एक क्षमता है।
* बाहरी शोर जीवन का सत्य है, पर वह हमारे भीतर शासन करे — यह आवश्यक नहीं।
* "गहरा शांत बोध" वह आंतरिक धुरी है जो जीवन के तूफानों में भी हमें स्थिर रखती है।

आज के ध्यान-भंग युग में — अपने केंद्र में लौटना, सबसे प्रभावशाली आत्म-संरक्षण और आत्म-विकास का कार्य है।

ज्योतिष का 'फोबिया' ? लोग 'ब्रेन रॉट' का शिकार होकर सही सलाह, उपाए और रत्नों का लाभ नहीं उठा पाते

पिंकी कुंडू

1. यह 'फोबिया' केवल चिकित्सा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, ज्योतिष में यह और भी अधिक पाया जाता है। उन ज्योतिषियों के बारे में हमने कई बार लिखा है, जो शनि, राहु-केतु, मङ्गल आदि के 'फोबिया' के शिकार हैं और उनका ज्योतिष केवल इन ग्रहों के उपायों तक सिमट कर रह गया है। लोगों का इतना 'ब्रेन-वाश' इस बारे में किया गया है, कि इन ग्रहों का डर उनके मन में भूत-प्रेत की तरह गहराई से बैठ गया है, जो निकलना बहुत मुश्किल है। ना तो इन नौसखिये ज्योतिषियों ने, ना ही ऐसे लोगों ने कभी सोचने का कष्ट किया, कि अगर सभी कष्ट इन ग्रहों के कारण हैं, तो इनके उपायों से मुश्किलें कम क्यों नहीं हो रहीं ?

2. इधर - उधर भटकने, कई-कई जगह से सलाह लेने, किसी पर भी विश्वास न कर पाने, सोशल मीडिया और इंटरनेट से पढ़-पढ़ कर, अपनी समझ से उपायों और रत्नों की सलाह में अदला - बदली कर लेने, आदि कई ऐसे कारण हैं, जो व्यक्ति को सही सलाह का पालन करने, उसका लाभ उठाने नहीं देते। हमारे पास लगभग हर दिन, एक - दो ऐसे फ़ोन आते हैं, जिसमें व्यक्ति ने मच्छ मणि, शुक्र मणि, घोड़े की नाल का छल्ला, नाव की कील का छल्ला, काल - सर्प यंत्र, स्फटिक माला, बुध यंत्र, शनि रांत्र, राहु यंत्र, और कुछ ने तो ऐसा कोई पत्थर भी पहना होता है, जिसका उसको नाम भी नहीं पता होता ! दुनिया भर के उलटे - सीधे उपाए कर रहे होते हैं, पता नहीं कौन से ज्योतिष शास्त्र से लिए गए होते हैं। कोई सूअर को जलेबी खिला रहा है, कोई जमीन में शहद की शीशी गाड़ रहा है, कोई सुरमा जमीन में गाड़ रहा है, कोई पानी में बहा रहा है, कोई कोयला जमीन में गाड़ रहा है, कोई जल - प्रवाह कर रहा है। कोई हमसे पूछ रहा है, कि मंदिर में, या गरीब को बादाम दे सकता है ? कोई पानी में नारियल बहाने की पूछ रहा है। वैसे, उनको हमसे पूछना ही नहीं चाहिए, या तो हमारी सलाह पर चलें, या जिसने कहा है, उसकी मान लें, एक की सुनें और मानें, तो अधिक लाभ होगा !

3. कई लोगों के जीवन और परिवार ऐसे चक्करों में बर्बाद हो गए। यहां एक अनुभव का विशेष तौर पर उल्लेख करना आवश्यक होगा, जहां एक महिला ने अपने पति को बस में करने के लिए, अपने गुरु जी के कहने पर, जमीन में कुछ गोमती चक्क्र गाड़ दिए। अगले ही दिन से उसके पति गंभीर रूप से बीमार हो गए, और उसके गुरु भी ! आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी, लाखों रुपये खर्च करके भी, पति को बचाया न सका। गुरु जी भी बच नहीं पाए थे। वैदिक ज्योतिष के सात्विक उपाए करके, हो सकता है, कि लाभ धीरे - धीरे हो, कम हो, या किसी एक - आध मामले में न भी हो पर, इस तरह से हानि नहीं होती।

4. पूरी जिंदगी को किनारे लगाने वाले कुछ ही ग्रह होते हैं, यानी कि सभी ग्रह एक जैसे महत्वपूर्ण नहीं होते। इसीलिए अनावश्यक उपाए तथा हर वर्ष फल में गैर जरूरी उपाए करना आपकी मानसिक स्थिति को कमजोर करता है तथा आप 'डोपामाइन' के शिकार हो जाते हैं। यानी कुछ तो करना है, कुछ ना कुछ तो पहनना, एक प्रकार का मानसिक विकार तथा फोबिया है। सोशल मीडिया पर ग्रहण से लेकर प्रत्येक तिथियों पर अनेकों प्रकार के उपायों की भरमार है। इंसान करें तो क्या करें परंतु मृगतृष्णा के अधीन कुछ ना कुछ करने की आदत की वजह से डोपामाइन और मानसिक विकारों का शिकार हो चुका है।

नेट लिंक्स को पढ़ते - पढ़ते, 'ब्रेन रॉट' का शिकार हो चुका है। गलत उपाए, और गलत रत्न सही उपायों और सही रत्नों के प्रभाव को नष्ट कर देते हैं।

विश्वस्तरीय एनजीओ ने बहादुरगढ़ में ठोस कचरा प्रबंधन और सीवरेज ट्रीटमेंट के कार्य में दिखाई रुचि

- डीसी ने समक्ष दिया ग्लोबल ईएसजी एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने प्रेजेंटेशन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 फरवरी। विश्वस्तरीय गैर सरकारी संगठन ने बहादुरगढ़ में ठोस कचरा प्रबंधन ,वाटर और सीवरेज ट्रीटमेंट के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक के साथ कार्य करने की रुचि दिखाई है। संगठन के पदाधिकारियों ने मंगलवार को सुबह लघु सचिवालय सभागार में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की मौजूदगी में अधिकारियों के समक्ष अपनी प्रेजेंटेशन दी। बैठक में गलोबल ईएसजी एसोसिएशन गैर सरकारी संगठन की ओर से किम युंघवा महाप्रबंधक इंडिया, यंग सून को अध्यक्ष कोरियन एसोसिएशन ऑफ गुजरात, अजय कटूरी विशेषज्ञ शहरी विकास और कुमारी शिल्पा पोडूवाल विशेषज्ञ पर्यावरण योजना एवं प्रबंधन ने प्रेजेंटेशन दी । डी सी ने प्रेजेंटेशन उपरांत नप और जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने संगठन के पदाधिकारियों को बहादुरगढ़ में मौजूद ठोस कचरा प्रबंधन और सीवरेज ट्रीटमेंट की व्यवस्था का अध्ययन करने और नई तकनीक के साथ विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने को कहा ।

लघु सचिवालय सभागार में में ग्लोबल ईएसजी एसोसिएशन के पदाधिकारियों का बुके से स्वागत करते हुए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल।

गैर सरकारी संगठन ने दिनभर बहादुरगढ़ में स्थित ठोस कचरा प्रबंधन साइट,वाटर ट्रीटमेंट प्लांट और सभी सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का अध्ययन किया । इस दौरान नप ईओ अरुण नांदल और पब्लिक हेल्थ से एसडीओ संदीप दुहन और अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। शहरी विकास विशेषज्ञ अजय ने बताया कि उनकी टीम ने मौजूदा व्यवस्था का बारीकी से अध्ययन किया है। इस पर विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर जिला प्रशासन को सौंपी जाएगी। उन्होंने बताया कि मौजूदा व्यवस्था में सुधार और नई तकनीक के साथ और कैसे बेहतर व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। यह रिपोर्ट भी तैयार कर जिला प्रशासन को सौंपी जाएगी। उन्होंने बताया कि उनके संगठन को वैश्विक स्तर का अनुभव है और साउथ ईस्ट एशिया के कई देशों में उनका संगठन इस फील्ड में कार्य रहा है। इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच, इस ई सतीश जनावा, सीएमजीजीए खुशी कौशल सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

फोटोः लघु सचिवालय सभागार में ग्लोबल ईएसजी एसोसिएशन के पदाधिकारी जिला प्रशासन के समक्ष प्रेजेंटेशन देते हुए ।

झज्जर जिला में मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं, युवा आगे आएं : डीसी

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने भटेड़ा व पाटोदा गांव की मत्स्य पालन केंद्रों का किया दौरा

आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा देने और सफल मॉडल को अन्य गांवों में लागू करने के दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 फरवरी। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से जिले में चल रही मत्स्य पालन योजना की प्रगति का मौके पर जाकर जायजा लिया। डीसी विभागीय अधिकारियों के साथ भटेड़ा और पाटौदा में चल रहे मत्स्य पालन केंद्रों पर पंहुचे। उन्होंने मत्स्य पालकों से सीधा संवाद किया । मत्स्य पालन के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही अनुदान आधारित योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने मत्स्य पालकों से उत्पादन,परिवहन, स्टोरेज और मार्केटिंग आदि के बारे विस्तार से जानकारी प्राप्त की। भेटड़ा और पाटौदा में प्रगतिशील मत्स्य पालक श्याम पाल,देवेंद्र और संजय तंवर ने अपनी सफलता के अनुभव डी सी के साथ साझा किए। पाटौदा में संजय ने बताया कि सर्दियों में मत्स्य पालन का ऑफ सीजन होने पर मशरूम की खेती करते हैं। डीसी ने मशरूम के प्लांट का भी दौरा किया और जागरूक किसान की प्रशंसा की।

उपायुक्त ने परियोजनाओं के विभिन्न घटकों की विस्तार से समीक्षा करते हुए कहा कि मत्स्य पालन न केवल किसानों की अतिरिक्त आय का सशक्त माध्यम बन रहा है, बल्कि ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार के नए अवसर भी सृजित कर रहा है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परियोजनाओं में आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक पद्धतियों तथा बेहतर प्रबंधन प्रणाली को प्राथमिकता दी जाए, ताकि उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित हो सके। डीसी ने कहा कि पंचायती जमीन और जल भराव वाले क्षेत्रों को इच्छुक मत्स्य पालकों को प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध कराएं।

डीसी ने दौरे के दौरान तालाबों की संरचना, जल की गुणवत्ता, मछलियों के संरक्षण, आहार प्रबंधन, बीज उपलब्धता तथा स्वच्छता संबंधी व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने कहा कि योजनाओं का प्रभाव तभी दिखाई देता है जब मत्स्य पालकों को लाभ मिले। इसके लिए संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें और नियमित रूप से मत्स्य पालकों का मार्गदर्शन करते हुए जागरूक करते रहें।

उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने यह भी निर्देश दिए कि भटेड़ा और पाटोदा में अपनाई जा रही सफल कार्यप्रणालियों का अध्ययन कर उन्हें जिले के अन्य गांवों में लागू करने की संभावनाएं तलाशी जाएं। उन्होंने कहा कि यदि इन परियोजनाओं के मॉडल को व्यापक स्तर पर अपनाया जाए तो जिले में मत्स्य उत्पादन को नई गति मिलेगी और ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनेंगे।

डीसी ने कहा कि सफल मत्स्य पालकों को जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल करें। इनकी सफलता से प्रेरित होकर अन्य युवा भी मत्स्य पालन को अपनाकर आर्थिक रूप से आत्म निर्भर बन सकते हैं। इस अवसर पर जिला मत्स्य अधिकारी अमित सिंह,सीएमजीजीए खुशी कौशल,बीडीपीओ धर्मपाल सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

हरियाणा खेल उपकरण प्रावधान योजना 2025-26 पंचायतों व नगर निकायों को मिलेगा खेल सामान, 31 मार्च तक भेजें मांग

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 फरवरी। जिला खेल अधिकारी सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगर निकायों के युवाओं को खेलों के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य से हरियाणा खेल उपकरण प्रावधान योजना 2025-26 आरंभ की गई है। योजना के तहत वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल, हैंडबॉल, बॉक्सिंग, कुश्ती, जूडो, क्रिकेट, योगा एवं वेटलिफ्टिंग सहित विभिन्न खेलों के लिए निर्धारित मानकों के अनुसार खेल सामग्री ग्राम पंचायतों एवं नगर निकायों को उपलब्ध करवाई जाएगी।

उन्होंने बताया कि संबंधित ग्राम पंचायतें एवं नगर निकाय अपनी आवश्यकता के अनुसार चिन्हित खेलों की सामग्री की मांग निर्धारित प्रोफार्मा में भरकर 31 मार्च 2026 तक जिला खेल कार्यालय, झज्जर में प्रस्तुत करें। खेल सामग्री की मांग से संबंधित प्रोफार्मा किसी भी कार्य दिवस में जिला खेल कार्यालय, झज्जर से प्राप्त किया जा सकता है। जिला खेल अधिकारी ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत वही ग्राम पंचायतें एवं नगर निकाय पात्र होंगे, जिन्होंने पिछले दो वित्तीय वर्षों में संबंधित खेल सामग्री प्राप्त नहीं की हो। सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि सरकार द्वारा प्रत्येक खेल के लिए पात्र खेल सामग्री निर्धारित की गई है। इसके तहत वॉलीबॉल, फुटबॉल, बास्केटबॉल एवं हैंडबॉल के लिए पोल स्थापित होने की स्थिति में 6-6 बॉल तथा आवश्यक नेट उपलब्ध करवाए जाएंगे। बॉक्सिंग के लिए 6 पंचिंग बैग एवं 12 जोड़ी दस्ताने, कुश्ती व जूडो के लिए निर्धारित आकार के कवर सहित 18-18 पीस मैट प्रदान किए जाएंगे। क्रिकेट के लिए एक किट उपलब्ध करवाई जाएगी, जिसमें दो बैट, स्टंप सहित दो विकेट सेट, 6 बॉल, दो जोड़ी बैटिंग पैड व दस्ताने तथा एक जोड़ी विकेटकीपिंग पैड व दस्ताने शामिल होंगे। इसके अलावा योगा के लिए निर्धारित आकार के मैट तथा वेटलिफ्टिंग के लिए बारबेल (20 किलोग्राम) के साथ 2.5, 5, 10, 15 व 20 किलोग्राम की एक-एक जोड़ी प्लेट भी उपलब्ध करवाई जाएगी।

24 कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए आवेदन शुरू

रोटावेटर सहित अन्य कृषि यंत्रों के लिए 16 फरवरी तक कर सकते हैं ऑनलाइन आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 फरवरी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा वर्ष 2025-26 के दौरान एसएमएएम योजना के तहत किसानों को 40 से 50 प्रतिशत अनुदान पर कृषि यंत्र उपलब्ध करवाने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि योजना का लाभ लेने के इच्छुक किसान 16 फरवरी तक विभाग की वेबसाइट एग्री हरियाणा. जीओवी. आईएन पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

उपायुक्त ने बताया कि व्यक्तिगत श्रेणी के तहत रोटावेटर, आलू बिजाई मशीन, ट्रैक्टर संचालित पावर वीडर, बैटरी/इलेक्ट्रिक/सौर संचालित पावर वीडर, सेल्फ प्रोपेल्ड मल्टी टूल बार, स्व-चालित उच्च क्लीयरेंस बूम स्प्रेयर, लोडर/भूसा कटर के साथ उच्च क्षमता वाला चारा काटने वाला यंत्र, ट्रैक्टर चालित सिलेज पैकिंग मशीन/सिलेज बेलर (1400-1500 किग्रा/घंटा), बैटरी चालित उर्वरक प्रसारक, ट्रैक्टर चालित उर्वरक प्रसारक, ट्रैक्टर संचालित हाइड्रोलिक प्रेस स्ट्रॉ बेलर, सब-सोइलर, मल्टी क्रॉप बेड प्लान्टर/रेज्ड बेड प्लान्टर, विनोइंग फैन, मक्का थ्रेशर/मक्का शेलर, गाय के गोबर से ब्रिकेटिंग मशीन, गोबर निर्जलीकरण मशीन, धान मोबाइल ड्रायर तथा लेजर लैंड लेवलर सहित कुल 24 कृषि यंत्र अनुदान पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि ऑनलाइन आवेदन की संख्या निदेशालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक होने की स्थिति में कृषि यंत्रों का चयन उपायुक्त की अध्यक्षता में जिला कार्यकारी समिति द्वारा ड्रा के माध्यम से किया जाएगा। चयनित किसान अनुदान पर प्राप्त कृषि यंत्र को पांच वर्षों तक बेच नहीं सकेगा।

उप निदेशक कृषि एवं किसान कल्याण विभाग ने जानकारी देते हुए बताया कि व्यक्तिगत आवेदन करने वाले किसान ने आवेदित कृषि यंत्र पर पिछले तीन वर्षों (2022-23, 2023-24 व 2024-25) में अनुदान न लिया हो। साथ ही किसान का रबी सीजन 2024 व खरीफ सीजन 2025 का मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर पंजीकरण होना अनिवार्य है।

आवेदन के दौरान किसान को स्वयं घोषणा पत्र, किसान के नाम भूमि संबंधी दस्तावेज व पटवारी रिपोर्ट (केवल लघु एवं सीमांत किसानों के लिए), अनुसूचित जाति के किसानों हेतु जाति प्रमाण पत्र, पैन कार्ड तथा स्वयं या परिवार पहचान पत्र में दर्ज किसी सदस्य के नाम राज्य में पंजीकृत ट्रैक्टर की वैध आरसी अपलोड करनी होगी। जिला स्तरीय कार्यकारी समिति में चयन के बाद किसानों को सभी संबंधित दस्तावेज सहायक कृषि अभियंता कार्यालय में जमा करवाने होंगे।

उन्होंने यह भी बताया कि किसान को अनुदान का लाभ केवल एक ही कृषि यंत्र पर दिया जाएगा। अधिक जानकारी के लिए किसान सहायक कृषि अभियंता, झज्जर कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

एग्रीस्टैक किसान आईडी कार्य में तेजी लाने के निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

एसडीएम अभिनव सिवाच नूना माजरा में संचालित एग्रीस्टैक किसान आईडी कैंप का निरीक्षण करते हुए

बहादुरगढ़, 3 फरवरी। एसडीएम अभिनव सिवाच बहादुरगढ़ और उपमंडल कृषि अधिकारी ने गांव नूना माजरा में संचालित एग्रीस्टैक किसान आईडी कैंप का निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को एग्रीस्टैक के कार्य को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए।

उपमंडल बहादुरगढ़ में अब तक 12 हजार 175 किसानों की आईडी बनाई जा चुकी है। एसडीएम ने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 22वीं किस्त का लाभ केवल उन किसानों को मिलेगा, जिन्होंने अपनी किसान आईडी बनवा ली है।

उन्होंने फील्ड स्टाफ को निर्देशित किया कि अधिक से अधिक किसानों को एग्रीस्टैक आईडी बनवाने के लिए जागरूक करें, ताकि कोई भी पात्र किसान योजना के लाभ से वंचित न रहे।

उपमंडल कृषि अधिकारी सुनील कौशिक ने बताया कि किसानों के हित में सरकार की महत्वाकांक्षी एग्रीस्टैक फार्मर आईडी एक महत्वपूर्ण डिजिटल पहचान है। इसके माध्यम से किसानों को सरकारी योजनाओं, सब्सिडी, फसल बीमा, ऋण, मुआवजा सहित अन्य सुविधाओं का सीधा एवं पारदर्शी लाभ मिल सकेगा। उन्होंने विश्वास जताया कि उपमंडल के सभी पात्र किसानों की फार्मर आईडी तय समय-सीमा के भीतर शत-प्रतिशत पूर्ण कर ली जाएगी।

अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस

बंधुत्व भाव से होगी जग में शांति, समृद्धि एवं खुशहाली

-प्रमोद दीक्षित मलय

'हम सब मिलकर एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर सकते हैं जो सभी के लिए समान अधिकारों और करुणा पर आधारित हो और एक मानव परिवार के रूप में शांति से रह सकें।' संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस यह कथन भारतीय मनीषा के बोधवाक्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अद्यतन व्याख्या ही है जिसमें एक शांत, सुखी, स्वस्थ, समृद्ध और तमाम भेद-भावों से मुक्त सुंदर दुनिया रचने की मार्मिक अपील समाहित है। सुंदर एवं समझ-बूझ भरी दुनिया बनाने का सपना केवल पारस्परिक बंधुत्व भाव से ही सम्भव है।समतामूलक ममतायुक्त दुनिया कि निर्मिति प्रेम-स्नेह, सहयोग एवं भाईचारे की सामूहिक सामाजिक चेतना से ही सम्भव है। इसी भावना से प्रेरित होकर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 21 दिसंबर, 2020 को एक प्रस्ताव पारित कर 4 फरवरी को सम्पूर्ण विश्व में अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के रूप में मनाने हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य देशों, नागरिक संगठनों एवं आध्यात्मिक संस्थाओं को आमंत्रित किया, जिसका स्वागत विभिन्न देशों सहित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक-आध्यात्मिक संस्थाओं द्वारा किया गया और 4 फरवरी, 2021 को पहली बार अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस मना कर मानवता के पक्ष में दुनिया में कहीं भी किसी भी मनुष्य के प्रति रंग, नस्ल, भाषा, क्षेत्र, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव न करने, मानवोचित गरिमामय व्यवहार करने तथा सहिष्णु समाज बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त किया।

यह संसार अत्यंत विशाल है। यहां विभिन्न संस्कृतियों को मानने-जीने वाला समुदाय युगों-युगों से निवास कर रहा है। इनमें परस्पर खान-पान एवं पहनावा, बोल-चाल एवं व्यवहार तथा आस्था, विश्वास एवं मान्यताओं में अंतर देखने को मिलता है। एक समुदाय के लिए उनके रीति-रिवाज एवं परम्परा अनुसार जो उचित, नैतिक एवं अनुकूल है, सम्भव है वह पद्धति दूसरे समुदाय के विश्वासों की धुरी पर अनैतिक, अनुचित एवं प्रतिकूल हो। ऐसी स्थिति में टकराव स्वाभाविक है, पर बेहतर समझ होने पर टकराव एवं द्वंद्व से बचते हुए और अपनी परम्पराओं का पालन करते हुए साथ-साथ न केवल रहा था सकता है बल्कि विकास के सामूहिक अवसर भी खोजे-बनाये जा सकते हैं। समुदायों की आस्था एवं विश्वास टकराव का हेतु न बनकर सामंजस्य एवं सौहार्द का सेतु बनें, यह बंधुत्व भाव के विकसित होने पर ही सम्भाव्य है। और इसके लिए आवश्यक है विवेकपूर्ण चिंतन-मनन और दूरदृष्टि, जो मानवता के फलक पर समभाव एवं सद्भाव के लिए सुंदर सुनहरे चित्र उकेर सके। सतत विकास और बौद्धिक प्रखरता के लिए मतभेद जरूरी हैं, किंतु हमारी असहमति किसी दूसरे पक्ष के जान-माल की हानि से संतुष्ट हो, यह बिलकुल निरर्थक एवं अव्यावहारिक है। असहमतियों से हमारे वैचारिक पृष्ठों पर उज्ज्वलता का आलोक बिखरना चाहिए, न कि अनिष्ट एवं अनय सोच के कलुष धब्बे। एक व्यक्ति एवं परिवार के रूप में प्रत्येक समुदाय एवं हममें से सभी सुखी, शांतिमय एवं समृद्ध होना चाहते हैं और यह तभी साकार हो सकेगा जब हम एक-दूसरे को सुखी-समुन्नत एवं प्रसन्न देखना चाहें। यह सहयोग, समन्वय, सहकार के सम्बल से किया जा सकता है, यही संस्कृति है। किंतु टकराव के रास्ते चलकर परस्पर लड़ते-झगड़ते और दूसरे को दुखी करके हम कभी अपना हित नहीं साधक सकते, यही विकृति है, अमानवीयता है। निर्णय हमें करना होगा कि हम किस पक्ष में खड़े होना चाहते हैं। निर्विवाद कहा जा सकता है, सभी मानवता के उद्यान में शीतल मलय बयार एवं सुगंधित सुमनों के सुरभित परिवेश में विचरण करना चाहते हैं। अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस यही भाव विकसित करने के लिए लोक जागरण करते हुए विभिन्न समुदायों एवं जन-जन को शांतिपूर्वक एक साथ रहने, एक-दूसरे के अधिकारों एवं गरिमा की रक्षा करने एवं मानवीय व्यवहार करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

बंधुत्व भावना केवल अन्यान्य समुदायों के साथ ही नहीं अपितु प्रथमतः अपने परिवारी जन, पड़ोसी, सहकर्मियों एवं अपरिचितों के प्रति हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है। यह हमें सर्व समावेशी, सख्य, सहिष्णु एवं लचीला बनाता है, जिससे सांस्कृतिक विविधता की सहज स्वीकृति एवं अभिव्यक्ति का अनुकूल अवसर एवं जगह बनती है। यदि हम वैश्विक परिदृश्य देखें तो सर्वत्र हिंसा, अराजकता, आगजनी, युद्ध दृश्य दिखाई पड़ते हैं जो मानवता के लिए अभिशाप हैं। मुझे यूनेस्को का एक कथन स्मरण हो रहा है, ₹चूंकि युद्ध मनुष्य के मन में उत्पन्न होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा भी मनुष्य के मन में ही निर्मित होनी चाहिए।₹ निश्चित रूप से युद्ध और शांति मानव मन रूपी सिक्के के दो पहलू हैं। विश्व के समस्त प्राणियों में मानव ही सर्वाधिक बुद्धिमान है। पर जब वह विवेकहीन हो स्वार्थ केंद्रित हो जाती है तो अनीति की पक्षधर बन मानवता के सुकोमल सुमनों को कुचलने लगती है। और तब यह दम्भ, अहंकार, हिंसा, बलात कब्जा, स्व श्रेष्ठताबोध और संसाधनों पर अपने एकाधिकार करने का प्रदर्शन बन जाती है। अनेकानेक उदाहरण जागतिक फलक पर वर्तमान हैं। इनसे मुक्ति का मार्ग भारतीय दर्शन के सूत्र 'सम्पूर्ण धरती एक परिवार' पर आधारित मानवीय बंधुत्व भाव से हि निकलेगा।

अंतरराष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस के आयोजन थीम आधारित होते हैं ताकि सम्बंधित विषय पर साझी समझ बनाई जा सके। वर्ष 2026 कि थीम 'विभाजन की जगह संवाद' वास्तव में मौन से मुखर होने की पैरवी करती है। किंतु यह मुखरता वाचालता एवं धर्मांधता के लिए नहीं है अपितु सामाजिक सहिष्णुता की वृद्धि, सद्भाव के प्रसार एवं सतत संवाद के रास्ते खोलेगी। संवाद से ही अहंकार की परिधि पर खड़ी दीवार दरकती है और विचारों की ताजी हवा के लिए एक खिड़की खुलती है। दीवार पर खुली एक खिड़की आत्मीयता, मधुरता एवं करुणा के कोमल झोंकों के आवागमन का रास्ता देती है और फिर ऐसी ही तमाम खिड़कियां दीवारों पर खुलने लगती हैं। विभाजन की जगह संवाद थीम अंतर्गत वैश्विक आयोजन कर स्वस्थ सुंदर सुभाषित दुनिया रचने-गुनने की ओर हम सभी बढ़ेंगे, ऐसा विश्वास है।

'संविधान नहीं मान सकते, तो भारत छोड़ दें', Meta - WhatsApp पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट (Supreme Court) ने मंगलवार को मेटा प्लेटफॉर्म्स और व्हाट्सएप की 2021 प्राइवेसी पॉलिसी पर तीखी टिप्पणियां कीं। कोर्ट ने कहा कि भारतीय नागरिकों की निजता के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली तीन जजों की बेंच ने मेटा को चेतावनी दी कि अगर संविधान का पालन नहीं कर सकते तो भारत छोड़ दें।

कोर्ट ने यह भी कहा कि यूजर्स का डेटा व्यावसायिक लाभ के लिए शेयर करना 'व्यक्तिगत जानकारी की चोरी' जैसा है।

मामला क्या है? यह सुनवाई मेटा और व्हाट्सएप की उन याचिकाओं पर हुई, जिसमें उन्होंने कॉम्पिटिशन कमीशन ऑफ इंडिया (CCI) के 213.14 करोड़ रुपये के जुर्माने और नेशनल कंपनी लॉ अपीलेट ट्रिब्यूनल (NCLAT) के फैसले को चुनौती दी थी। CCI ने 2021 की व्हाट्सएप प्राइवेसी पॉलिसी को 'टेक इट ऑर लीव इट' (मानो या न मानो) की तरह बताया था, जिसमें यूजर्स को मजबूरन डेटा शेयरिंग स्वीकार करनी पड़ती थी। यह पॉलिसी व्हाट्सएप यूजर्स का डेटा पैरेंट कंपनी मेटा के साथ शेयर करने की अनुमति देती थी, जिससे टारगेटेड ऐड्स और बिजनेस लाभ होता था। NCLAT ने जुर्माना बरकरार रखा था लेकिन डेटा शेयरिंग पर कुछ प्रतिबंध हटा दिए थे।

कोर्ट की मुख्य टिप्पणियां मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा, 'आप भारतीयों के डेटा के साथ खेल नहीं सकते। हम एक भी नागरिक की निजता से समझौता नहीं होने देंगे।'

कोर्ट ने पॉलिसी को 'शोषणकारी' और 'संवैधानिकता का मजाक' बताया। CJI ने कड़ा ऐतराज जताया और कहा, 'संविधान मानो या भारत छोड़ो। उन्होंने कहा कि अगर कंपनियां भारतीय संविधान और नागरिकों के मौलिक अधिकारों (निजता का अधिकार) का सम्मान नहीं कर सकतीं तो यहां काम नहीं करना चाहिए।

कोर्ट ने नाराजगी जताई कि निजी चैट्स और मैसेज से विज्ञापन कमाने के लिए डेटा का इस्तेमाल किया जा रहा है।

बेंच ने कहा कि करोड़ों भारतीयों की निजता की रक्षा जरूरी है और व्यावसायिक लाभ के लिए इस अधिकार से खिलवाड़ नहीं हो सकता।

क्या होगा आगे? कोर्ट ने मेटा - व्हाट्सएप से लिखित हलफनामा मांगा है कि वे यूजर्स का पर्सनल डेटा शेयर नहीं करेंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो मामले की सुनवाई नहीं होगी। इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी मिनिस्ट्री (MeitY) को भी पक्षकार बनाया गया है। अगली सुनवाई और अंतरिम आदेश 9 फरवरी को होगा।

भारत–अमेरिका ट्रेड डील की उम्मीद से बाजार में तेजी, निफ्टी मजबूत, सेक्टरों में उछाल

संगिनी घोष

भारत और अमेरिका के बीच संभावित ट्रेड डील को लेकर सकारात्मक संकेतों ने शेयर बाजार में उत्साह बढ़ा दिया है। निवेशकों को उम्मीद है कि इस समझौते से व्यापारिक रिश्ते मजबूत होंगे, निर्यात को बढ़ावा मिलेगा और भारतीय उद्योगों के लिए वैश्विक अवसर खुलेंगे।

दिनभर बाजार में सकारात्मक माहौल बना रहा, क्योंकि ट्रेडर्स और निवेशक इस डील को आर्थिक स्थिरता और विकास के संकेत के रूप में देख रहे हैं।

शेयर बाजार की प्रतिक्रिया: निफ्टी और सेंसेक्स में मजबूती

भारतीय शेयर बाजार ने दिन की शुरुआत मजबूती के साथ की और सत्र के दौरान तेजी जारी रही:

1. निफ्टी 50 ऊपर कारोबार करता दिखा, प्रमुख सेक्टरों में खरीदारी का समर्थन मिला
2. सेंसेक्स भी मजबूत बना रहा, जिससे व्यापक बाजार भरोसा नजर आया
3. निवेशकों ने ट्रेड डील से जुड़ी स्थिर नीति की उम्मीद में नई दिलचस्पी दिखाई

कुल मिलाकर, बाजार का रुख साफ तौर पर सकारात्मक रहा।

सेक्टर पर नजर: किन क्षेत्रों में सबसे ज्यादा बढ़त?

ट्रेड डील की उम्मीद का असर कई सेक्टरों में साफ दिखा:

निर्यात और मैन्युफैक्चरिंग शेयर

निर्यात से जुड़े शेयरों में तेजी देखी गई, क्योंकि अमेरिकी बाजार तक आसान पहुंच भारतीय कंपनियों के लिए लाभकारी हो सकती है।

* माइनिंग और मेटल सेक्टर
* खनन और धातु कंपनियों के शेयरों में उछाल आया, क्योंकि वैश्विक व्यापार बढ़ने से औद्योगिक मांग मजबूत होने की संभावना है।
* ऑयल और एनर्जी सेक्टर
* ऊर्जा सहयोग की उम्मीदों के चलते ऑयल सेक्टर भी चर्चा में रहा।
* डिफेंस और रणनीतिक उद्योग
* डिफेंस शेयरों में भी निवेशकों की रुचि बढ़ी, क्योंकि भविष्य में साझेदारी और निर्माण अवसर बढ़ सकते हैं।

फाइनेंशियल सेक्टर की मजबूती

* बैंकिंग और वित्तीय शेयरों ने बाजार को सहारा दिया, क्योंकि विदेशी निवेश और व्यापारिक भरोसा इस सेक्टर को सीधा फायदा पहुंचा सकता है।

ट्रेड डील से उम्मीदें: बाजार इतना सकारात्मक क्यों है?

निवेशकों के नजरिए से यह डील केवल एक समझौता नहीं, बल्कि आर्थिक संकेत बन गई है।

बाजार को उम्मीद है कि इससे:

* भारतीय कारोबार को बेहतर निर्यात अवसर मिलेंगे
* वैश्विक निवेशकों का भरोसा मजबूत होगा
* कंपनियों की कमाई आने वाले समय में बढ़ सकती है
* लंबी अवधि के विकास के लिए अनुकूल माहौल बनेगा

उपभोक्ताओं और कारोबारियों के लिए इसका क्या मतलब?

अगर व्यापार बाधाएं कम होती हैं और सहयोग बढ़ता है, तो भारतीय कंपनियां वैश्विक स्तर पर तेजी से विस्तार कर सकती हैं।

उपभोक्ताओं के लिए यह आगे चलकर:

* बेहतर कीमतें और प्रतिस्पर्धा
* मैन्युफैक्चरिंग में रोजगार के नए अवसर
* आर्थिक विकास में स्थिरता

जैसे फायदे ला सकता है।

मुख्य बिंदु

1. ट्रेड डील चर्चा: भारत–अमेरिका समझौते की उम्मीद से बाजार में उत्साह
2. बाजार की चाल: निफ्टी और सेंसेक्स में मजबूती के साथ कारोबार
3. सेक्टर तेजी: माइनिंग, ऑयल, डिफेंस, एक्सपोर्ट और फाइनेंस में उछाल
4. निवेशक भरोसा: ट्रेड डील उम्मीदों से खरीदारी बढ़ी
5. भविष्य लाभ: निर्यात वृद्धि और आर्थिक सहयोग की संभावना
6. सकारात्मक माहौल: प्रगति जारी रही तो बाजार को समर्थन मिल सकता है

राष्ट्रीय असर और आगे की राह

भारत–अमेरिका ट्रेड डील की बातचीत ने एक बार फिर दिखाया है कि वैश्विक कूटनीति और शेयर बाजार कितनी गहराई से जुड़े हैं। निवेशकों में फिलहाल उत्साह है, लेकिन असली असर इस बात पर निर्भर करेगा कि यह समझौता कितनी जल्दी और कितनी प्रभावी तरीके से लागू होता है। फिलहाल बाजार ने इस खबर का स्वागत किया है और प्रमुख उद्योगों में सकारात्मक माहौल बना हुआ है।

डिजिटल मेटा डिस्क्रिप्शन (SEO):

भारत–अमेरिका ट्रेड डील की उम्मीद से शेयर बाजार में तेजी, निफ्टी और सेंसेक्स मजबूत। माइनिंग, ऑयल, डिफेंस, फाइनेंशियल और निर्यात सेक्टरों में बढ़त, निवेशकों को दीर्घकालिक लाभ की उम्मीद।

सोनी केसरी ने देवघर नगर निगम वार्ड नं0 19 के पार्षद प्रत्याशी हेतू किया नामांकन

पूरे ढोल, गाजे-बाजे के साथ निकली जनसम्पर्क, आशीर्वाद-यात्रा

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर। देवघर नगर निगम वार्ड नं0 19 के वार्ड पार्षद प्रत्याशी के तौर पर सोनी केसरी ने अपना नामांकन पर्चा भरा। इस क्रम में ढोल गाजेबाजे के साथ सोनी केसरी ने जन-सम्पर्क अभियान करते हुए वार्ड के देवतुल्य जनता का आशीर्वाद प्राप्त किया। सोनी केसरी ने वार्ड की जनता को आश्वासन दिया कि अगर आपका विश्वास हमें मिला तो इस वार्ड को स्वच्छ, सुन्दर और विकसित वार्ड बनायेंगे। साथ ही, हर वक्त हर हमेशा वार्ड की जनता की सेवा में सदैव तत्पर व मौजूद रहेंगे।

झिगराघाट मंडला मप्र.की कवियत्री योगिता चौरसिया इंदौर में हुई सम्मानित।

परिवहन विशेष न्यूज

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर की पत्रकारिता अध्ययन वाला एवं विश्व संवाद केंद्र (मालवा प्रांत) द्वारा आयोजित 'नर्मदा साहित्य मंथन' प्रतियोगिता में योगिता चौरसिया जी ने विशेष स्थान प्राप्त किया। उत्कृष्ट अभिव्यक्ति श्रेष्ठ लेखन के लिए विशेष उपलब्धि के लिए नर्मदा साहित्य मंथन' एवं विश्व संवाद केंद्र मालवा मंच पर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि सतीश गोकुल पंडा जी एवं माधुरी यादव जी के संचालन में प्रतियोगिता संयोजक अमित रावत पवार जी ने प्रशस्ति पत्र और सम्मान पत्र प्रदान किया ।इनकी इस उपलब्धि पर साहित्य जगत परिवार एवं मित्र जनों ने हर्ष व्यक्त किया और बधाइयां दी।

परम ओंकार मंदिर में शब्द सृजन संस्था के द्वारा सरस कवि सम्मेलन 04 फरवरी को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। टाउनशिप स्थिति ओंकारेश्वर कॉलोनी के परम ओंकार मंदिर में शब्द सृजन संस्था (पंजीकृत), दिल्ली एन.सी.आर. के द्वारा सरस कवि सम्मेलन 04 फरवरी 2026 को अपराह्न 03 बजे से टाउनशिप स्थित शक्तिधाम मंदिर के अधिष्ठाता आचार्यश्री पीताम्बर महाराज के पावन सानिध्य में बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए शब्द सृजन संस्था (पंजीकृत), दिल्ली एन.सी.आर. के संस्थापक अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध साहित्यकार, विश्व रिकॉर्ड धारक डॉ. राजीव कुमार पाण्डेय ने बताया है कि काव्य सम्मेलन में दिल्ली, गाजियाबाद आगरा, मथुरा आदि स्थानों के श्रेष्ठ कवि गण काव्य पाठ करेंगे ।जिनमें डॉ. ओंकार त्रिपाठी (दिल्ली), ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (वृन्दावन), डॉ. ब्रजभूषण चतुर्वेदी (वृन्दावन), राजीव सिंघल (गाजियाबाद), गार्गी कौशिक (गाजियाबाद), रुपेश धनगर (मथुरा) व डॉ. राधाकांत शर्मा (वृन्दावन) आदि कविगण प्रमुख रूप से भाग लेंगे।

कवि सम्मेलन के संयोजक डॉ. राजीव पाण्डेय ने सभी साहित्य प्रेमियों से इस सरस कवि सम्मेलन में सहभागिता करने का आग्रह किया है।

ब्रज संस्कृति की बहुमूल्य निधि हैं 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

वृन्दावन के प्रख्यात साहित्यकार व लब्ध-प्रतिष्ठ पत्रकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रज से सम्बन्धित उत्कृष्ट लेखन के लिए एक जाना-पहचाना नाम है ।वह पिछले लगभग 50 वर्षों से इस क्षेत्र में पूर्ण शिद्दत के साथ जुटे हुए हैं ।उन्होंने लेख, कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, रिपोर्ताज एवं साक्षात्कार आदि विधा में जमकर लिखा है और लिख रहे हैं। इन विधाओं में उनकी अब तक कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं ।इसके अलावा उनकी कई अन्य पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने वृन्दावन शोध संस्थान में केंद्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित "ब्रज संस्कृति विश्व कोश परियोजना" में सह संपादक के पद पर कार्य करके ब्रज संस्कृति की अविस्मरणीय सेवा की है। इसके अलावा वह स्वयं द्वारा संचालित श्रीहित परमानंद शोध संस्थान के माध्यम से ब्रज के प्रख्यात वाणीकारों के साहित्य का संरक्षण करके उसे प्रकाशित भी कर रहे हैं। उनके द्वारा लिखित ब्रज सम्बन्धी एक हजार से भी अधिक रचनाएं देश-विदेश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं ।उनके द्वारा लिखे लेखों के अनुवाद न केवल अपने देश की अनेक भाषाओं में अपितु विश्व की विभिन्न भाषाओं में भी प्रमुखता के साथ हुए हैं ।वह दूरदर्शन, आकाशवाणी, फीचर्स एजेंसियों एवं विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं के सूचीबद्ध लेखक हैं। उन्होंने देश की कई प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं के संपादकीय विभाग में उच्च पदों पर कार्य भी किया है।

'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ब्रज सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष भी हैं ।इस संस्थान के द्वारा समाजसेवा के विभिन्न सेवा प्रकल्प संचालित किए जा रहे हैं ।इसके अलावा वह वृन्दावन की कई अन्य समाजसेवी संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी हिन्दी सेवी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी परिवार से संबद्ध हैं ।उनके एक पितामह स्व. पंडित सिद्धगोपाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। साथ ही वह राजनैतिक कैदी के रूप में कई वर्षों तक विभिन्न जेलों में रहे ।इस सबके चलते इनके पूरे परिवार को आए दिन ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचारों को सहना पड़ा ।डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के दूसरे पितामह स्व. पंडित सियाराम चतुर्वेदी ने ब्रिटिश काल में राष्ट्र भाषा हिन्दी के उन्नयन हेतु अनेकानेक कार्य किए। उनके ही अथक प्रयासों से महाकवि देव की जन्म स्थली कुसमरा (मैनपुरी) में "महाकवि देव स्मारक" की स्थापना हुई ।डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के ताऊ प्रोफेसर स्व. जगत प्रकाश चतुर्वेदी व पिता स्व. वेदप्रकाश चतुर्वेदी भी हिन्दी के जाने माने साहित्यकार थे ।स्व. प्रोफेसर जगत प्रकाश चतुर्वेदी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय व काशी विद्यापीठ में पत्रकारिता के प्रोफेसर भी रहे थे ।इसके साथ ही वे के.एम. मुंशी हिन्दी विद्यापीठ, आगरा (आगरा विश्वविद्यालय) के निदेशक एवं इलाहाबाद आकाशवाणी में प्रोड्यूसर भी रहे थे ।इनकी ताई श्रीमती किरण चतुर्वेदी ने ही प्रमुख हिन्दी दैनिक ₹दिन - रात₹ का प्रकाशन प्रयागराज से प्रारम्भ किया था ।जो कि बाद में इटावा से भी प्रकाशित हुआ ।साथ ही वे प्रमुख हिन्दी दैनिक ₹नवभारत टाइम्स₹ से भी सम्बद्ध रहीं। डॉ. गोपाल चतुर्वेदी के एक अनुज श्री शशि शेखर दैनिक ₹हिन्दुस्तान₹ के प्रधान संपादक हैं। एक अनुज श्री अनुपम चतुर्वेदी ₹दैनिक जागरण₹ (आगरा) में उप-संपादक हैं ।अतः इनको साहित्य सृजन व पत्रकारिता के संस्कार अपने पूर्वजों व परिवारी जनों से विरासत में मिले हैं ।इसीलिए वह अपनी 13-14 वर्ष की अल्पायु में ही शब्दों की दुनियां में आ गए थे।

ब्रजनिष्ठ, साहित्य - संस्कृति मनीषी, ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी की लेखनी समाज प्रबोधन का पुनीत कार्य कर रही है। चूंकि ब्रज उनके दिल में बसता है इसलिए वह ब्रज सम्बन्धी लेखन के आकाश हैं। उनका लेखन सउद्देश्य है, इसलिए वो प्रेरणाप्रद भी है व ऊर्जाप्रद भी है।

ब्रज की माटी की सुगन्ध उनकी भाषा शैली में स्पष्ट दृष्टि गोचर होती है ।उनका साहित्य भगवान श्रीकृष्ण एवं उनके सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर केंद्रित है ।वह ब्रज के गौरव हैं ।साथ ही ब्रज संस्कृति की बहुमूल्य निधि भी हैं।

सम्मान व पुरुस्कार

1 – विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर (बिहार) के द्वारा "विद्या वाचस्पति", "विद्या सागर", "भारत गौरव", "हिन्दी रत्न" एवं ₹पत्रकार गौरव₹ सम्मान।

2- वृन्दावन के फोगला आश्रम में सम्पन्न हुए अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन में दरभंगा (बिहार) के सांसद गोपालजी ठाकुर द्वारा "मिथिला रत्न सम्मान"।

3- कानपुर की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "मानस संगम" के स्वर्ण जयंती समारोह में सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री रमेशचंद्र लाहौरी एवं पश्चिम बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा सम्मान।

4- कानपुर की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "अनमोल रत्न सेवा संस्थान" के वार्षिक समारोह में तत्कालीन औद्योगिक विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री सतीश महाना द्वारा "संतोष साक्य स्मृति सम्मान"।

5- श्रीकृष्ण लीला संस्थान, वृंदावन द्वारा प्रख्यात रासाचार्य व तत्कालीन विधायक पद्मश्री स्वामी रामस्वरूप शर्मा द्वारा "भाई शिवशंकर रामचन्द्र तुलस्यान स्मृति पुरुस्कार"

6- ब्रजनिधि सेवा ट्रस्ट द्वारा उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के तत्कालीन कार्यकारी अध्यक्ष श्री केशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा "स्वामी मेघश्याम शर्मा स्मृति सम्मान"।

7- ब्रज कला केंद्र, मथुरा द्वारा प्रख्यात संत श्री विजय कौशल महाराज द्वारा "स्व. शिवचरण लाल मीतल ब्रज साहित्य पुरुस्कार" एवं "माताश्री मुन्नीदेवी मीतल पत्रकारिता पुरुस्कार"।

8- प्रख्यात टीवी चैनल "भावना" के द्वारा मथुरा के तत्कालीन सांसद कुंवर मानवेन्द्र सिंह द्वारा "भावना उत्कृष्टता सम्मान"।

9- धामपुर (उत्तर प्रदेश) की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "अभिव्यक्ति" के द्वारा "मानवाधिकार प्रहरी सम्मान" व "स्नेह पुंज सम्मान"।

10- इंदौर की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "श्रीश्री साहित्य सभा के द्वारा "साहित्य शिखर सम्मान"

11- वृन्दावन बाल विकास मंच के द्वारा "विशिष्ट सेवा सम्मान"।

12- शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश) की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "प्रेरणा परिवार" के द्वारा "साहित्य सारंग सम्मान"। 13- झुंझुनूं (राजस्थान) की "आदर्श समाज समिति इंडिया" के द्वारा " गांधी सेवा रत्न अवॉर्ड"।

14- ब्रजवासी जगद्गुरु परिषद, वृन्दावन के द्वारा "गीता रत्न सम्मान"।

15- साहित्य मंडल, नाथद्वारा (राजस्थान) के द्वारा राजस्थान ब्रज भाषा अकादमी, जयपुर के तत्कालीन अध्यक्ष प्रोफेसर सुरेन्द्र उपाध्याय द्वारा "पत्रकार प्रवर सम्मान"।

16- अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा, वृन्दावन द्वारा "पत्रकार शिरोमणि" की उपाधि से अलंकृत।

17- ब्रह्म कीर्ति रक्षक दल, नई दिल्ली के द्वारा "लोकतंत्र स्तंभ पत्रकार सम्मान"।

18- नगर पालिका परिषद, मैनपुरी के द्वारा " विशिष्ट नागरिक सम्मान"।

19- श्रीहित परमानंद शोध संस्थान, वृन्दावन द्वारा "श्रीराधा गोविन्द नागार्च स्मृति सम्मान"

20- पंडित हरप्रासाद पाठक स्मृति बाल साहित्यकार पुरुस्कार समिति एवं तुलसी साहित्य संस्कृति अकादमी, मथुरा द्वारा "पंडित हरप्रसाद पाठक स्मृति हिन्दी रत्न सम्मान"

21- अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा, वृन्दावन द्वारा "वामन भगवान सम्मान"।

22- एलर्ट सिटीजन वेलफेयर सोसाइटी, वृन्दावन द्वारा "न्यूज मेकर्स अवॉर्ड"।

23- उत्तर प्रदेश युवा ब्राह्मण महासभा (ब्रज क्षेत्र), वृन्दावन द्वारा "प्रबुद्ध जन सम्मान"। आदि के लिए सम्मानित व पुरुस्कृत किया जा चुका है।

24- श्रीराधा सनेह बिहारी सेवा ट्रस्ट (पंजी.) के द्वारा "गो. अतुल स्मृति सम्मान" ।

25- श्रीगंगा लोक कल्याण सेवा संस्थान, वृन्दावन (पंजी.) की सांस्कृतिक संस्था ₹बांसुरी₹ के द्वारा भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से आयोजित ₹रंग महोत्सव₹ में ₹वंशी अवतार श्रीहित हरिवंश महाप्रभु अवार्ड₹।

26- श्रीराम लीला कमेटी वृन्दावन ट्रस्ट, वृन्दावन द्वारा आयोजित श्रीराम लीला महोत्सव - 2023 के अंतर्गत ₹विशिष्ट नागरिक सम्मान₹।

27- श्री परशुराम शोभायात्रा समिति (रजि.), वृन्दावन के द्वारा वर्ष 2024 में ₹विप्र रत्न अवॉर्ड एवं 2025 में ₹विप्र गौरव सम्मान₹।

28- श्री ध्यानमूर्ति सत्संग सेवा संस्थान द्वारा 2025 में ₹सेवा सहयोग सम्मान₹ ।

29- प्राग हरि साहित्यिक व आध्यात्मिक शोध संस्थान, जयपुर और ब्रजवाणी जन सेवा समिति, ब्रज नगर (डीग) राजस्थान के द्वारा ₹ अध्यात्म प्रखर लेखनी सम्मान - 2025₹ ।

30- श्री अवध धाम गुरु कृपा ट्रस्ट, वृन्दावन (मथुरा) उत्तर प्रदेश के द्वारा ₹ श्री ब्रज वसुन्धराम गौरव सम्मान₹ ।

31- श्रीकृष्ण कीर्ति फाउंडेशन-वृन्दावन एवं श्रीराधा माधव सेवा समिति के द्वारा ₹भामाशाह श्री सम्मान₹ ।

32- भागवत पीठ, सत्य सनातन सेवार्थ संस्थान (रजि.) के द्वारा 2024 में ₹ब्रज रत्न₹ की उपाधि।

33- शब्द सृजन संस्थान (पंजी.) नई दिल्ली के द्वारा ₹सारस्वत सम्मान₹ ।

34- फाउंडेशन के द्वारा आयोजित तृतीय अंतरराष्ट्रीय योग उत्सव 2025 में ₹ब्रज सेवा सम्मान₹ से सम्मानित।

35- ग्लोवल सोशल इंट्रेस्ट लीग, सोनीपत के द्वारा ₹मानवता रत्न सम्मान - 2025₹ ।

36- मानव सेवा ट्रस्ट (रजि.) मुम्बई के द्वारा 2025 ₹विशिष्ट अतिथि सम्मान₹।

37- ऑल इंडिया कॉन्फ्रेंस फॉर इंटेलेक्चुअल के द्वारा 28 सितंबर 2025 को लखनऊ के गोमती नगर स्थित सी.एम. एस. ऑडिटोरियम में यूपी के पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं राज्य सभा सांसद डॉक्टर दिनेश शर्मा के द्वारा ₹यूपी रत्न₹ की मानद उपाधि से अलंकृत।

इसके साथ ही डॉ. गोपाल चतुर्वेदी अमरावती (महाराष्ट्र) की प्रख्यात साहित्यिक संस्था "अहिसास" की इंदौर (मध्य प्रदेश) इकाई।

श्रीमद्वल्लभाचार्य तृतीय पीठ श्रीद्वारकाधीश मंदिर, कांकरोली (राजस्थान)।

श्रीराधा दामोदर मन्दिर, वृन्दावन।

सनातन संस्कार संघ, वृन्दावन

श्री कल्पतरु सेवा संस्थान, वृन्दावन,

श्रीहित पंचसती महोत्सव समिति-वृन्दावन।

श्रीश्री नरहरि सेवा संस्थान-वृन्दावन।

श्री सनातन संस्कार सेवा संस्थान-वृन्दावन।

श्री यशोदानंदन धाम, वृन्दावन।

हिन्दी साहित्य संगम (पंजी.) गाजियाबाद / फरीदाबाद।

श्रीहनुमद् आराधन मण्डल, वृन्दावन।

श्री हनुमत रामायण समिति-वृन्दावन।

श्रीराधा नाम प्रचार सेवा समिति-वृन्दावन।

श्री शिवचरण लाल मीतल ब्रज साहित्य पुरस्कार।

किसान इण्टर कॉलेज, सौंख खेड़ा, मथुरा।

अखिल भारतीय पत्रकार प्रेस क्लब, मथुरा।

श्री देवी मेला एवं ग्राम सुधार प्रदर्शनी, मैनपुरी एवं

रोटरी काव्य मंच-इंदौर आदि के अलावा देश-विदेश की अनेक संस्थाओं व संस्थानों के द्वारा सम्मानित व पुरुस्कृत किये जा चुके हैं ।इसके अलावा इनके कई प्रख्यात संतों, धर्माचार्यों, राजनेताओं व अतिविशिष्ट व्यक्तियों से निकट के सम्बन्ध हैं।

- डॉ. राधाकांत शर्मा

गुरुघर की रोटी, गुरुघर की
दाल।
छप्पन भोग में भी नही ऐसा
कमाल।

गुरुघर का आचार।
बदल देता है विचार।

गुरुघर का पानी।
शुद्ध करे वाणी।

गुरुघर के फल और फूल।
उतार देती है जन्मों जन्मों की
धूल।

गुरुघर की छाया।
बदल देती है काया।

गुरुघर का प्याज।
सौ बीमारियो का इलाज।

गुरुघर का रायता।
मिलती है चारों और से सहायता।

गुरुघर के आम।
नई सुबह नई शाम।

गुरुघर का हलवा।
दिखाता है जलवा।

गुरुघर की सेवा।
मिलता है मिश्री और मेवा।

गुरुघर का स्नान।
चारों धाम के तीर्थ के समान।

गुरुघर को जो सजाऐ।
उस का कुल सवर जाये।

गुरुघर का जो सवाली।
उसकी हर दिन होली हर रात
दीवाली।

*नानक नाम चडदी कला तेरे
भानडे सरबत दाँ भला ।

₹नाम का फल₹

संसार का भ्रमण करते हुए गुरु
नानक सच्चे पातशाह और
मरदाना किसी जंगल से जा रहे
थे!

मरदाना ने कहा

महाराज बहुत भूख लगी हैं!

नानक जी नो कहा मरदाना
रोटियां सेंक ले,

मरदाना ने कहा बहुत ठंड हैं,

ना तो कोई चुल्हा हैं और न ही
कोई तवा हैं और पानी भी बहुत
ठंडा हैं!

तालाब छोटा था जैसे ही गुरु
नानक जी ने तालाब को
पानी को स्पर्श किया तो पानी
उबाल मारने लगा!

नानक देव जी ने कहा मरदाना
अब रोटी सेंक ले!

मरदाने ने
आटे की चक्कियां बना कर उस
तालाब में डालने लगें,

रोटियां तो सिक्की नहीं आटे की
चक्की डूब गई, दुसरी

चक्की डाली वह भी डूब गई फिर
एक ओर डाली वह भी डूब गई!

मरदाना नो आकर नानक जी से
कहा कि महाराज
आप कहते हो रोटियां सेंक ले,

रोटियां तो कोई सिक्की
नहीं बल्कि सारी चक्कियां डूब
गई!

सच्चे पातशाह कहने
लगे मरदाना नाम जप कर
रोटियां सेंकी थी,

मरदाना चरणों में गिर गया
महाराज गलती हो गई!

नानक देव जी कहने लगे मरदाना
नाम जप कर रोटियां सेंक,

मरदाना ने नाम जप कर पानी में
चक्की डाली तो चमत्कार हो गया

रोटियां तो सिक्क गई बल्कि डूबीं
हुई रोटियां भी तैर कर
ऊपर आ गई और सिक्क गई!

मरदाना ने सच्चे पातशाह से
पूछा महाराज ये क्या चमत्कार हैं
नानक देव जी ने कहा
मरदाना नाम के अंदर वो शक्ति
हैं कि नाम जपने वाला
अपने आप तैरने (भव सागर से
पार होना) लगता हैं और
आसपास के माहौल को तार देता
हैं!

जहां गुरु नानक देव जी ने तालाब
को स्पर्श कर ठंडे पानी
को गरम पानी में उबाल दिया वो
आज भी वहीं हैं जिसका नाम
₹मणिकरण साहिब₹ हैं!

: *प्यारी अरदास

हे सच्चे पातशाह !

तू साडे जिस्म ते,
साडी रूह नूं नेक कर दे ।

साडे हर फैसले विच,
तेरी रजा.शामिल कर दे ।

जो त्वाडा हुकम होवे,
ओ साडा इरादा कर दे ।

ते जो इह अरदास पढ़ के आगे
भेजे,
ओदी हर तमन्ना पूरी कर दे ...

हर कहानी एक विज्ञान की कहानी है: विज्ञान के सार्वभौमिक स्वरूप को समझना

● डॉ. विजय गर्ग

इस विचार का एक और प्रमुख उपयोग रेनॉल्ड्स जर्नलिज्म इंस्टीट्यूट और द ओपन नोटबुक द्वारा की गई पत्रकारिता पहल से आता है। उनकी परियोजना, जिसका शीर्षक है 'एवरी स्टोरी इज ए साइंस स्टोरी', का उद्देश्य पत्रकारों को वैज्ञानिक साक्ष्य और सोच को सभी प्रकार की रिपोर्टिंग में एकीकृत करने के लिए उपकरण उपलब्ध कराना है, शिक्षा और बुनियादी ढांचे से लेकर सार्वजनिक स्वास्थ्य और जलवायु कवरेज तक।

हाल के वर्षों में, वाक्यांशहर कहानी एक विज्ञान की कहानी हैर एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में उभरा है कि विज्ञान प्रयोगशालाओं या भौतिकी समीकरणों तक ही सीमित नहीं है - यह हमारे जीवन और समाज के हर पहलू को व्याप्त करता है। यह विचार विज्ञान और नीति, संस्कृति, मानव व्यवहार और रोजमर्रा की कहानी जैसे अन्य क्षेत्रों के बीच पारंपरिक सीमाओं को चुनौती देता है।

वाक्यांश के पीछे उत्पत्ति और विचार नेतृत्व

इस वाक्यांश को साइंटिफिक अमेरिकन के एक संपादकीय में प्रमुखता प्राप्त हुई, जहां संपादकों ने तर्क दिया कि विज्ञान प्रत्येक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे पर लागू होता है और विज्ञान को संस्कृति, राजनीति या मानव अनुभव से अलग मानना भ्रामक है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक सोच - डेटा, साक्ष्य और विश्लेषण - सार्वजनिक स्वास्थ्य से लेकर सामाजिक न्याय तक के विषयों पर बहस को सूचित कर सकता है।

इस विचार का एक और प्रमुख उपयोग रेनॉल्ड्स जर्नलिज्म इंस्टीट्यूट और द ओपन नोटबुक द्वारा की गई पत्रकारिता पहल से आता है। उनकी परियोजना, जिसका शीर्षक है 'एवरी स्टोरी इज ए साइंस स्टोरी', का उद्देश्य पत्रकारों को वैज्ञानिक साक्ष्य और सोच को सभी प्रकार की रिपोर्टिंग में एकीकृत करने के लिए उपकरण उपलब्ध कराना है, शिक्षा और बुनियादी ढांचे से लेकर सार्वजनिक स्वास्थ्य और जलवायु कवरेज तक।

इस वाक्यांश का वास्तव में क्या अर्थ है?

अपने मूल में, "हर कहानी एक विज्ञान की कहानी है।" यह एक वैचारिक लेंस और एक व्यावहारिक दर्शन दोनों है

क) विज्ञान हर जगह है

विज्ञान केवल पाठ्यपुस्तकों में दी गई खोजें नहीं हैं। इसका आधार यह है:

टीके कैसे काम करते हैं और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं।

सार्वजनिक नीति के स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक प्रभाव।

पारिस्थितिकी तंत्र, मौसम और जलवायु का व्यवहार।

दैनिक जीवन को आकार देने वाले तकनीकी परिवर्तन। इसे पहचानने से कहानियाँ सतही कथाओं से परे समृद्ध हो जाती हैं।

ख) साक्ष्य और डेटा समझ को मजबूत करते हैं

विज्ञान विचारों का परीक्षण करने, दावों का मूल्यांकन करने और पैटर्न उजागर करने के तरीके प्रदान करता है। वैज्ञानिक साक्ष्य को शामिल करने से पत्रकारों और लेखकों को यह समझाने में मदद मिलती है कि चीजें क्यों घटित होती हैं - न कि केवल यह कि वे घटित हुई थीं। इससे सटीकता और सार्वजनिक विश्वास में सुधार होता है।

ग) कहानी और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं

यद्यपि कुछ लोग तर्क देते हैं कि विज्ञान और कहानी अलग-अलग हैं (क्योंकि विज्ञान का उद्देश्य वस्तुनिष्ठता है), कहानी कहने से जटिल वैज्ञानिक विचारों को स्पष्ट रूप से और यादगार तरीके से संप्रेषित करने में मदद मिल सकती है। यह उन दर्शकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जो तकनीकी विवरणों से परिचित नहीं हैं।

रोजमर्रा की कहानियों में विज्ञान

विज्ञान केवल विज्ञान समाचार के लिए नहीं है:

सार्वजनिक स्वास्थ्यः फ्लू के मौसम, मोटापे या मानसिक स्वास्थ्य पर रिपोर्टिंग में महामारी विज्ञान संबंधी आंकड़े शामिल होते हैं।

अर्थशास्त्रः श्रम प्रवृत्तियों या आय असमानता की जांच सांख्यिकीय और व्यवहार विज्ञान के माध्यम से की जा सकती है।

शिक्षाः सीखने के परिणाम अक्सर संज्ञानात्मक मनोविज्ञान या शिक्षणशास्त्र से प्राप्त निष्कर्षों को प्रतिबिंबित करते हैं।

पर्यावरणः प्रदूषण, जैव विविधता की हानि, या जल गुणवत्ता मूलतः वैज्ञानिक विषय हैं। प्रत्येक मामले में, साक्ष्य के आधार पर रिपोर्टिंग एक कथा को विज्ञान की कहानी में बदल देती है।

यह क्यों मायने रखता है

क) बेहतर सार्वजनिक समझ

जब कहानियों में वैज्ञानिक संदर्भ शामिल होता है, तो दर्शकों को इस बात की गहरी समझ मिलती है कि चीजें कैसे और क्यों घटित होती हैं। इससे नागरिकों को सूचित निर्णय लेने और गलत सूचनाओं का विरोध करने में मदद मिलती है।

ख) बाधाओं को तोड़ना

एक आम गलत धारणा है कि विज्ञान केवल वैज्ञानिकों या विशेष रिपोर्टिंग के लिए है। 'एवरी स्टोरी इज ए साइंस स्टोरी' दर्शन इस बाधा को तोड़ता है, तथा सभी संचारकों - पत्रकारों, शिक्षकों, लेखकों - को अपने क्षेत्र में वैज्ञानिक जांच करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ग) निर्णय लेने में सुधार

चाहे विषय स्वास्थ्य हो, नीति हो या प्रौद्योगिकी हो, विज्ञान का उपयोग करने से यह संभावना बढ़ जाती है कि निर्णय — व्यक्तिगत या सामाजिक — धारणा या अफवाह के बजाय विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा सूचित किए जाते हैं।

निष्कर्ष

हर कहानी एक विज्ञान की कहानी है, यह सिर्फ एक आकर्षक नारा नहीं है — यह एक गहरी मान्यता है कि विज्ञान वास्तविकता के ताने-बाने का आधार है। चाहे स्थानीय स्कूल बोर्ड के निर्णय को कवर करना हो या वैश्विक जलवायु शिखर सम्मेलन को, वैज्ञानिक साक्ष्य, विधियों और तर्क को शामिल करने से स्पष्टता, विश्वसनीयता और प्रभाव बढ़ता है।

अंततः, इस दृष्टिकोण को अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि प्रत्येक कथा को प्रयोगशाला संदर्भ में प्रस्तुत किया जाए — बल्कि मानव अनुभव के माध्यम से बुने गए वैज्ञानिक धागे को देखा जाए। इससे कहानियाँ न केवल जानकारीपूर्ण होती हैं, बल्कि दर्शकों के लिए परिवर्तनकारी भी बनती हैं।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब

नर्सरी से कॉलेज तक, एडमिशन की युद्धभूमि

(दाख़िले की दौड़ में बच्चों पर बढ़ता दबाव और प्रतिस्पर्धा)

- डॉ० सत्यवान सौरभ

आज शिक्षा का अर्थ सीखना नहीं, बल्कि साबित करना हो गया है। साबित करना कि बच्चा बेहतर है, तेज़ है, दूसरों से आगे है। और यह साबित करने की ज़िम्मेदारी बच्चे से ज़्यादा उसके माता-पिता के कंधों पर डाल दी गई है। नतीजा यह है कि नर्सरी से लेकर विश्वविद्यालय तक, 'दाख़िला' अब एक सामान्य प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानसिक, आर्थिक और सामाजिक तनाव का कारण बन चुका है।

दाख़िले की इस दौड़ में सबसे पहले निशाने पर आता है मासूम बच्चा। वह उम्र, जब खेलना, कल्पना करना और सवाल पूछना चाहिए, उसी उम्र में उसे फ़ॉर्म, इंटरव्यू, टेस्ट और रैंक के बोझ तले दबा दिया जाता है। नर्सरी एडमिशन के नाम पर माता-पिता छुट्टियाँ लेते हैं, स्कूल-दर-स्कूल भटकते हैं, सिफ़ारिशें ढूँढते हैं और कई बार आत्मसम्मान तक गिरवी रख देते हैं। यह सब इसलिए नहीं कि बच्चा सीख सके, बल्कि इसलिए कि वह 'अच्छे स्कूल' का टैग हासिल कर सके।

आज शिक्षा संस्थान ज्ञान के मंदिर कम और प्रतिस्पर्धी बाज़ार ज़्यादा बनते जा रहे हैं। अख़बारों में 'मिशन एडमिशन' जैसे शब्द आम हो चुके हैं। टीवी चैनलों पर दाख़िले को लेकर बहसें होती हैं, कोचिंग संस्थान भविष्य की गारंटी बेचते हैं और स्कूल-कॉलेज अपनी ब्रांड वैल्यू चमकाने में लगे रहते हैं। इस पूरे तंत्र में बच्चा एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक प्रोजेक्ट बन जाता है—जिसे हर हाल में सफल दिखाना ज़रूरी है।

कभी 60–65 प्रतिशत अंक लाना सम्मान की बात हुआ करती थी। सेकंड डिविज़न जीवन की हार नहीं मानी जाती थी। आज हालात यह हैं कि 90 प्रतिशत से नीचे अंक लाने वाला बच्चा और उसके माता-पिता अपराधबोध में जीते हैं। 95–96 प्रतिशत अंक लाने वालों को भी चैन नहीं है, क्योंकि कट-ऑफ़ हर साल नई ऊँचाई छू रहा है। ऐसा लगता है मानो अंकों की इस दौड़ का कोई अंत ही नहीं।

यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब ज़्यादातर बच्चे 90 प्रतिशत से ऊपर अंक ला रहे हैं, तो क्या वास्तव में सब असाधारण प्रतिभाशाली हैं? या फिर मूल्यांकन प्रणाली ही अपना संतुलन खो चुकी है? शिक्षा का उद्देश्य समझ विकसित करना था, लेकिन वह अब अंकों और रैंक के गणित में सिमट कर रह गया है। ज्ञान से ज़्यादा प्रदर्शन मायने रखता है, और प्रदर्शन से ज़्यादा उसका प्रचार।

इस पूरी प्रक्रिया का सबसे भयावह पहलू है बच्चों पर पड़ने वाला मानसिक दबाव। परीक्षा, इंटरव्यू और चयन की अनिश्चितता बच्चे के भीतर डर और असुरक्षा पैदा करती है। असफलता की स्थिति में पहला सवाल यही होता है—"अब क्या होगा?" यह सवाल सिर्फ़ भविष्य का नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का भी होता है। बच्चा यह मानने लगता है कि उसकी असफलता उसके माता-पिता की हार है। यह भाव उसके आत्मविश्वास को गहरे तक चोट पहुँचाता है।

विडंबना यह है कि माता-पिता भी इस दबाव के शिकार हैं। समाज ने उनके सामने सफलता की एक संकीर्ण परिभाषा रख दी है—टॉप स्कूल, टॉप कॉलेज और टॉप करियर। वे यह सोचने से डरते हैं कि अगर उनका बच्चा इस तय ढाँचे में फिट नहीं हुआ, तो लोग क्या कहेंगे। परिणामस्वरूप वे बच्चे की रुचि, क्षमता और स्वभाव को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त असमानता इस समस्या को और गंभीर बना देती है। जिनके पास संसाधन हैं, वे महँगी कोचिंग, प्राइवेट स्कूल और मैनेजमेंट कोटा खरीद सकते हैं। लेकिन मध्यम और निम्न वर्ग के बच्चों के लिए यह दौड़ कहीं ज़्यादा कठिन है। योग्यता के बावजूद अवसर न मिलना, व्यवस्था पर से भरोसा तोड़ देता है। धीरे-धीरे शिक्षा सामाजिक न्याय का माध्यम न रहकर विशेषाधिकार का प्रतीक बन जाती है।

एक और चिंताजनक पहलू यह है कि हम बच्चों को सोचने के बजाय रटने की ट्रेनिंग दे रहे हैं। सवाल पूछने वाले बच्चे 'डिस्ट्रैक्टेड' माने जाते हैं और उत्तर याद करने वाले 'मेधावी'। रचनात्मकता, संवेदनशीलता और नैतिकता जैसे गुण पाठ्यक्रम से बाहर कर दिए गए हैं। शिक्षा का लक्ष्य इंसान बनाना था, लेकिन हम मशीन तैयार करने में लगे हैं।

इस संदर्भ में यह सवाल बेहद ज़रूरी है—क्या शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ़ टॉपर पैदा करना है? या ऐसे नागरिक तैयार करना है जो समाज के प्रति ज़िम्मेदार हों, सवाल पूछ सकें और बदलाव ला सकें? जब तक हम इस सवाल का ईमानदारी से उत्तर नहीं खोजेंगे, तब तक दाख़िले की यह दौड़ और ज़्यादा बेरहम होती जाएगी।

ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षा को बाज़ार से मुक्त किया जाए और मूल्यांकन प्रणाली को मानवीय बनाया जाए। स्कूलों और कॉलेजों में सीटें बढ़ाने, गुणवत्ता सुधारने और अवसरों को समान बनाने की दिशा में गंभीर प्रयास हों। सबसे ज़रूरी है माता-पिता और समाज की सोच में बदलाव—कि हर बच्चा एक जैसा नहीं होता और सफलता का एक ही रास्ता नहीं होता।

अगर शिक्षा को आनंद, जिज्ञासा और आत्मविकास का माध्यम बना दिया जाए, तो दाख़िले की यह दौड़ अपने आप धीमी पड़ जाएगी। वरना हम आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसा भविष्य सौंपेंगे, जहाँ डिग्रियाँ तो होंगी, लेकिन संतुलन और संवेदनशीलता नहीं।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम रुककर सोचें—क्या शिक्षा का मक़सद केवल टॉपर पैदा करना है, या संवेदनशील, सोचने-समझने वाला इंसान बनाना? जब तक दाख़िले की यह अंधी दौड़ जारी रहेगी, तब तक शिक्षा बोझ बनी रहेगी, आनंद नहीं। बदलाव सिस्टम में चाहिए, लेकिन शुरुआत हमारी सोच से होगी—वरना यह दौड़ हर साल और बेरहम होती जाएगी।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक विचारक है।)

प्लास्टिक का बढता उपयोग भयावह

डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल

वर्तमान दौर में हमारे जीवन में प्लास्टिक एक ऐसा हिस्सा बन चुका है जिसके बिना आधुनिक जीवन की कल्पना करना कठिन लगता है। सुबह उठते ही टूथब्रश से लेकर दूध की थैली, मोबाइल कवर, पानी की बोतल, खाद्य पैकेजिंग, दवाइयों की शीशियां-हर जगह प्लास्टिक मौजूद है। यह हल्का है, सस्ता है, टिकाऊ है और आसानी से ढाला जा सकता है। इन्हीं खूबियों के कारण प्लास्टिक को कभी आधुनिक युग का चमत्कार कहा गया था लेकिन आज वही चमत्कार धीरे-धीरे मानवता और प्रकृति के लिए एक भयावह अभिशाप बनता जा रहा है। प्लास्टिक की सबसे बड़ी समस्या उसकी अविनाशी प्रकृति है। कागज, लकड़ी या कपड़ा समय के साथ नष्ट हो जाते हैं, लेकिन प्लास्टिक सैकड़ों वर्षों तक मिट्टी, पानी और वातावरण में बना रहता है। यह न तो पूरी तरह सड़ता है, न ही प्रकृति में घुलता है। परिणामस्वरूप पृथ्वी पर प्लास्टिक का ढेर लगातार बढ़ता जा रहा है। नदियाँ, समुद्र, खेत, सड़कें-हर जगह प्लास्टिक कचरे की मौजूदगी सामान्य दृश्य बन चुकी है।

शहरों की जीवन शैली ने इस संकट को और गहरा किया है। यूज एंड थ्रो संस्कृति यानी इस्तेमाल करो और फेंक दो। इस मानसिकता ने प्लास्टिक के उपभोग को बेतहाशा बढ़ाया है। एक बार उपयोग में आने वाले प्लास्टिक बैग, कप, प्लेट, स्ट्रॉ और पैकेजिंग सामग्री हमारे आराम का साधन तो बने लेकिन पर्यावरण के लिए जहर साबित हुए। हम सुविधा के लिए कुछ मिनट

प्लास्टिक का उपयोग करते हैं, लेकिन उसकी कीमत प्रकृति को सदियों तक चुकानी पड़ती है।

प्लास्टिक प्रदूषण का सबसे भयावह रूप समुद्रों में दिखाई देता है। हर साल लाखों टन प्लास्टिक समुद्र में पहुंच जाता है। मछलियां, कछुए, पक्षी और अन्य जलचर इसे भोजन समझकर निगल लेते हैं, जिससे उनकी मौत हो जाती है। कई बार जानवर प्लास्टिक में उलझकर दम तोड़ देते हैं। यह केवल वन्य जीवन की समस्या नहीं है, बल्कि अंततः वही प्लास्टिक खाद्य श्रृंखला के माध्यम से मानव शरीर तक पहुंच जाता है। माइक्रोप्लास्टिक आज पानी, नमक, दूध और यहां तक कि हवा में भी पाया जा रहा है। प्लास्टिक केवल पर्यावरण ही नहीं, मानव स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा है। प्लास्टिक निर्माण में प्रयुक्त रसायन हार्मोन असंतुलन, कैंसर और अन्य बीमारियों से जुड़े पाए गए हैं। प्लास्टिक कचरे को जलाने से निकलने वाली जहरीली गैसें श्वसन रोगों को जन्म देती हैं। अनेक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कचरा जलाना आम बात है, जिससे हवा और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि यदि प्लास्टिक इतना हानिकारक है, तो इसका उपयोग पूरी तरह बंद क्यों नहीं किया जा सकता? सच्चाई यह है कि प्लास्टिक के कुछ उपयोग वास्तव में उपयोगी और आवश्यक हैं जैसे चिकित्सा उपकरण, रक्त थैलियां, सीरिंज, आपातकालीन पैकेजिंग आदि। समस्या प्लास्टिक के अस्तित्व से अधिक उसके अनियंत्रित और अनावश्यक उपयोग की है।

समाधान का रास्ता भी हमारे व्यवहार से ही निकलता है। सबसे पहला कदम है प्लास्टिक के विकल्प अपनाना। कपड़े या जूट के थैले, स्टील और कांच की बोतलें, मिट्टी और पत्तल से बने बर्तन-ये सब हमारे पारंपरिक जीवन का हिस्सा रहे हैं। आवश्यकता है उन्हें आधुनिक जीवन में फिर से स्थान देने की। दूसरा महत्वपूर्ण कदम है कम उपयोग, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण'' की भावना को अपनाना। सरकारों ने भी प्लास्टिक पर नियंत्रण के लिए नियम बनाए हैं। कई राज्यों में सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है लेकिन कानून तभी प्रभावी होंगे, जब नागरिक उनमें सहभागी बनें। केवल जुर्माने या आदेश से समस्या हल नहीं होगी. इसके लिए सामाजिक चेतना और नैतिक जिम्मेदारी जरूरी है। विद्यालयों, परिवारों और समाज को मिलकर नई पीढ़ी में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करनी होगी। बच्चों को यह सिखाना होगा कि सुविधा के साथ जिम्मेदारी भी आती है। प्लास्टिक का विकल्प चुनना केवल पर्यावरण बचाने का कार्य नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की रक्षा भी है।

प्लास्टिक हमारे लिए सुविधा है या अभिशाप? उत्तर सीधा नहीं है। सीमित और विवेकपूर्ण उपयोग में यह सुविधा हो सकता है लेकिन अंधाधुंध उपभोग में यह निस्संदेह एक अभिशाप है। निर्णय हमारे हाथ में है। यदि हमने समय रहते अपनी आदतें नहीं बदलीं, तो सुविधा की यह कीमत पृथ्वी को बहुत भारी पड़ सकती है। आज जरूरत है कि हम प्रकृति के साथ अपने संबंध को फिर से समझें और यह स्वीकार करें कि सच्ची सुविधा वही है जो जीवन और पर्यावरण दोनों के लिए सुरक्षित हो।

वैश्विक भरोसे का प्रतीक भारतवर्ष

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारतवर्ष कभी किसी देश पर आक्रमण करना नहीं चाहता और ना ही भारत कभी विश्व विजय की बात करता है। भारतवर्ष हमेशा विश्व के एकीकरण की बात करता है अर्थात विश्वबंधुत्व की बात करता है। वह सभी को एक साथ लेकर चलने की बात करता है। भारत स्वयं में एक विश्व है क्योंकि यहां की जो संस्कृति है, वह अपने आप में बहुत बड़ी है। हमने अपनी शुरुआती शिक्षा से ही सुना है कि भारत सोने की चिड़िया है, सोने की चिड़िया का अर्थ धीरे-धीरे हमारी समझ में आया अर्थात भारत धन-धान्य से संपन्न और एक शांतिप्रिय देश रहा है। हमने किसी भी पड़ोसी देश पर या किसी टापू पर अपना अधिकार या कहीं स्वामित्व स्थापित नहीं किया और ना हमने कभी करने की सोची। हमने सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार किया, अतिथि देवो भव का विचार हमने हमेशा अपने अंदर रखा है।

हमारे देश की हर एक व्यवस्था हमें दुनिया से अलग और बहुत समृद्ध तथा संपन्न बनती है। यहां ऋतु चक्र के चलते अलग-अलग फैसलें, फल, फूल, सब्जियां आदि हमें मिलते रहते हैं। ऋतु चक्र के चलते ही हमारे अलग-अलग तीज-त्योहार हमारे अंदर संचार भर देते हैं। दुनिया का सबसे सुंदर सुखद यह देश अपने में अद्भुत है। यहां पर हर समय लोग आनंद उत्साह और नवसंचार के साथ रहते हैं। ऋतु चक्र के चलतेप्रकृति का बदलता स्वरूप, खान-पान, वेशभूषा आदि पर भी प्रभाव डालता है। बदलते मौसम चक्र के चलते व्यापार को भी अलग-अलग अंदाज में चलाया जाता है। यहां कोई स्थिरता या रुकावट नहीं है। चरैवेति चरैवेति का सिद्धांत हमारे यहां सभी अपनाते हैं। मौसम चक्र के साथ ही हमारे घूमने फिरने के स्थान भी बदल जाते हैं।

हमारी संस्कृति विश्व की सबसे सुंदर और शांतिप्रिय है। हमारी संस्कृति हमारा आभूषण है। हमारी संस्कृति, समाज, ऋतु चक्र, तीर्थ, पूजा-पाठ आदि सभी हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। इन सभी व्यवस्थाओं के चलते हमारा व्यापार, रोजगार, काम-धंधे आदि सभी कुछ अलग-अलग अंदाज में वर्ष भर चलते रहते हैं। यहां कभी कोई काम रुकता नहीं है। इसलिए हम सोने की चिड़िया कहे गए हैं। यहां पर हर समय लोगों को काम करने की आदत है जबकि विश्व के कितने ही देशों में एक ही ऋतु है और लोग उसी मौसम की मार झेलते रहते हैं। वहां कभी अलग-अलग अन्न धन होना संभव नहीं है। वहां तीज त्यौहार गिने चुने हैं, इसलिए लोगों में उत्साह कम नजर आता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतवर्ष में परिवार के प्रति एक गहरा लगाव है। जबकि बहुत से देश में पारिवारिक व्यवस्था केवल नाम के लिए है। जब परिवार, समाज, संस्कृति, उत्सव कम होंगे तो स्वाभाविक है कि ऐसे देश की सोच और मानसिकता भी बहुत छोटी और अमानवीय ही होगी। चाहे वह अपने को धन संपन्न माने या कहते रहे, लेकिन यह धन किस काम का है। अपनी धन क्षमता के कारण ही इन विकसित देशों ने ही दो बड़े विश्व युद्ध को जन्म दे दिया। केवल अपने को बड़ा दिखाने के लिए और विश्व का सबसे शक्तिशाली देश कहलाए जाने वाले अमेरिका ने तो मानवीयता का सबसे घिनौना प्रहार जापान पर किया। उसके दो शहरों को परमाणु शक्ति के प्रहार सेमिटा दिया। ऐसी विकसित अर्थव्यवस्था या ऐसे धन-धान्य का क्या लाभ? जो मानवीयता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन जाए?

जिन देशों में धूप के लिए लोग तरसते हों, जो केवल एक ही ऋतु में रहते हो, वह अपने को कैसे विकसित और धन संपदा से भरे देश का सकते हैं? यह केवल एक मानसिकता है, यदि यह देश सभी चीजों से संपन्न होते तो दूसरे देशों पर आक्रमण क्यों करते हैं? क्यों संपूर्ण मानवता को बार-बार खतरे में डालते हैं? पूरी पृथ्वी की पर्यावरणव्यवस्था को खराब कर देते हैं और जाने कितना ही प्रदूषण फैला रहे हैं? सभी जीव खतरे में नजर आ रहे हैं। युद्ध कभी किसी को कुछ नहीं देते, यह केवल विनाश का रास्ता है। आज भारत को छोड़ बहुत सारे यूरोपीय और अन्य देश तीसरे विश्व युद्ध का खतरा झेलने के लिए खड़े हैं। एक बार फिर मानवता पर प्रहार किया जा रहा है। अब विश्व ऐसे महाविनास और युद्धों से बचना चाहता है।

वैश्विक दक्षिण में भारत का नेतृत्व !

डॉ.बालमुकुंद पाण्डेय

वैश्विक दक्षिण जिसे "तीसरी दुनिया" के नाम से जाना जाता है। विकासशील नवोदित राष्ट्र- राज्यों का समूह है जो वित, तकनीकी विशेषज्ञता, तकनीकी शोध, नवाचार एवं नवोन्मेष में पिछड़े हुए हैं। मौलिक स्तर पर ये राष्ट्र - राज्य गरीबी, बीमारी, आतंकवाद और उग्रवाद से पीड़ित हैं। विकसित राष्ट्र राज्यों के द्वारा जलवायु न्याय के लिए अत्याचार, वैश्विक स्तर के साम्यवादी दादाओं (रूस एवं चीन) और वैश्विक दरोगा (संयुक्त राज्य अमेरिका) के भितरघाती राजनीति व नव उपनिवेशवादी राजनीति ग्रसित राष्ट्र - राज्यों से ' आर्थिक सहायता ' की आवश्यकता है।

भारत हर वैश्विक मंच पर ' ग्लोबल साउथ' के हितों को पूरी मजबूती से उठा रहा है। भारत का यह सदप्रयास है कि जो भी नवाचार करें, उसे संपूर्ण ' ग्लोबल साउथ' एवं ' कॉमनवेल्थ देशों ' को फायदा हों। भारत वैश्विक मंचों पर विकासशील एवं अल्प- विकसित देशों के मुद्दों को मजबूती से उठा रहा है। भारत सभी लोकतांत्रिक देशों के विकास में निरंतर सहयोग कर रहा है। लोकतांत्रिक संस्थाएं और प्रक्रियाएं वर्तमान में लोकतंत्र को स्थिरता, गति एवं व्यापकता प्रदान कर रही है। भारत वैश्विक स्तर का तेजी से उभरता प्रमुख अर्थव्यवस्था है जिसका विकास दर 7% के रफ्तार से उदीयमान अर्थव्यवस्था बना हुआ है। भारत के जन- केंद्रित नीतियों और कल्याणकारी योजनाओं एवं लोकसम्मत विधियों से लोकतंत्र एवं लोकतांत्रिक संस्कृति में उन्नयन हो रहा है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में भारत के दूरदर्शी और राजनय में कौशल केंद्रित नेतृत्व इन विकासशील राष्ट्र- राज्यों को नेतृत्व दिया है। भारत सुरक्षा और संरक्षण में दक्षिण एशिया में" बड़े भाई" की भूमिका में नेतृत्व कर रहा है तो विकासशील राष्ट्र - राज्यों को औषधि के क्षेत्र में सहयोगी राज्य प्रत्यय की भूमिका का निर्वहन कर रहा है। भारत वैश्विक उत्तर और वैश्विक दक्षिण के' खाई' को मिटाने का सफलतम और दूरदर्शी प्रयास कर रहा है। भारत इन राष्ट्र- राज्यों के लिए संरक्षक की भूमिका में भय और त्रासता को मिटाने का प्रयास कर रहा है जिससे जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा और सतत विकास पर एकीकृत और सांगठनिक दृष्टिकोण का उन्नयन किया जा सकें।

भारत अपने नेतृत्व और उभरते व्यक्तित्व के द्वारा लोकतांत्रिक शासन(वैश्विक स्तर पर तानाशाही की समाप्ति), मानवाधिकार(प्रत्येक राष्ट्र- राज्य अपने घरेलू संवैधानिक व्यवस्था में मानवाधिकार को सुरक्षा और लिपिबद्ध करें) एवं मानवाधिकार की सुरक्षा में अपना यथोचित प्रयास करें। बुनियादी ढांचे और औद्योगिक संरचना में निवेश को प्रोत्साहित करना है। भारत का विचार है कि अंतरराष्ट्रीय संगठनों को स्थानीय चुनौतियों का सामना एवं समाधान करने के लिए सबल करना है। वैश्विक दक्षिण की जटिल सामूहिक चुनौतियों के लिए लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा ,जलवायु और बहुपक्षीय शासन को संबोधित करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की सामयिक परिवेश में आवश्यकता है। वैश्विक दक्षिण के समूह, राष्ट्र- राज्यों में नवीकरणीय ऊर्जा, विकास क्षेत्र, टिकाऊ कृषि ,वानिकी प्रथाओं, पारिस्थितिक पर्यटन संरक्षण प्रयास, जलवायु लचीलापन और अनुकूलन पहल और हरित बुनियादी ढांचा विकास में सराहनीय पहल किया है। इन

देशों ने डिजिटल तकनीकी, नवाचार केंद्रों के उन्नयन, आईटी, सॉफ्टवेयर उद्योग, डिजिटल भुगतान और वित्तीय समावेशन ,ई-कॉमर्स, ऑनलाइन बाजार, जैव प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवा में अग्रतर उन्नति की है। इन सभी परिस्थितियों में वैश्विक दक्षिण के राष्ट्र - राज्यों के लिए भारत का नेतृत्व समकालीन में आशा की किरण प्रतीत हुआ है जो अन्य राष्ट्र- राज्यों के लिए समान सहयोग और सतत विकास के लिए अनथक प्रयास कर रहा है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन(नाम) का नेतृत्व करने के अपने गरिमामयी और उज्जवल इतिहास के साथ- साथ उभरता भारत समकालीन में वैश्विक भू- राजनीति में एक गतिशील एवं ऊर्जावान भूमिका निभाने के लिए अपने सामाजिक आर्थिक, सामरिक और भू - राजनीतिक और शक्ति संरचना को उन्नयन कर रहा है। वैश्विक स्तर पर महा शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ाने में सहयोग की संकल्पना दुर्लभ प्रत्यय हो चुका है। कोविड महामारी, रूस- यूक्रेन युद्ध, इजरायल ईरान संकट, वेनेजुएला संकट और वैश्विक स्तर पर गुटिकरण की राजनीति, एकाधिकार प्रभुत्व राजनीति, एकध्रवीय वैश्विक व्यवस्था बनाने की राजनीति, आर्थिक एवं राजनीतिक संगठनों ने ' वैश्विक दक्षिण ' की संकल्पना को प्रसांगिक बना दिया है। भारत वैश्विक दक्षिण के लिए प्रमुख ' राज्यकारक ' के रूप में उभर रहा है जो वैश्विक दक्षिण के राष्ट्र - राज्यों के राष्ट्रीय हितों और भू - राजनीति के मुद्दों को वैश्विक मंच पर जोरदार ढंग से उठा रहा है। वैश्विक स्तर पर सामाजिक आर्थिक असमानता, भुखमरी, आतंकवाद ,लथियारबंद अंतरराज्यीय समस्याएं बढ़ी हैं।

भारत ने वर्ष २०२३ में जी- २०की अध्यक्षीय मंच से वैश्विक दक्षिण की आवाज को मजबूती से उठाया था, ब्रिक्स के मंच से भी वैश्विक दक्षिण की आवाज को, वैश्विक अध्यक्षीय सम्मेलन के मंच एवं संयुक्त राष्ट्र के मंच से भी ' वैश्विक दक्षिण' की आवाज को बढ़ाया है। वैश्विक संबंधों में यह क्रांतिकारी अवसर संस्थाओं को "समावेशी विश्व व्यवस्था" बनाने में महत्वपूर्ण और प्रेरक भूमिका निभा रहा है। भारत वैश्विक दक्षिण राष्ट्रों में ' अग्रणी ' की भूमिका में नेतृत्व कर रहा है जो वैश्विक स्तर के मंचों के भीतर एवं उनमें एक मजबूत समर्थन नेटवर्क बनाने के लिए अपने ' राज्यकारक ' नेतृत्व में राजनीतिक कारक की भूमिका बना रहा है।

राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना केशवकुंज, झंडेवालान, नई दिल्ली।

अमृतसर में सरहद पार से चल रहे हथियार तस्करी नेटवर्क के दो गुर्गे 7 पिस्तौलों सहित काबू

साहिल बेरी

अमृतसर 3 फरवरी। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के अनुसार पंजाब को सुरक्षित राज्य बनाने के लिए चलाई गई मुहिम के दौरान, अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने अवैध हथियार तस्करी मॉड्यूल के तीन गुर्गों को सात आधुनिक पिस्तौलों समेत गिरफ्तार करके इस मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। यह जानकारी आज यहां डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान रेशम सिंह उर्फ घुल्ला (30) निवासी गांव डलेरी, तरनतारन, सुमित उर्फ सचिन (28) निवासी गुमानपुरा, अमृतसर और विशाल कुमार (22) निवासी भिखीविंड, तरनतारन के रूप में हुई है। बरामद किए गए पिस्तौलों में तीन 9 एमएम ग्लॉक पिस्तौल, एक इटली का बना 9 एमएम बेरेटा, एक तुर्की का बना 9 एमएम जिगाना, एक तुर्की का बना 9 एमएम पीएक्स5 ग्लॉक और एक .30 बोर का पिस्तौल शामिल है। डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चला है कि गिरफ्तार किए गए मुलजिम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से पाकिस्तान स्थित तस्करों के सीधे संपर्क में थे, जो ड्रोन के जरिए अवैध हथियारों की खेप भेजते थे। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार मुलजिम अपने हैंडलरों के निर्देशों पर इन अवैध हथियारों को आगे डिलीवर करते थे।

डीजीपी ने बताया कि इस मामले के आगे-पीछे के संबंध स्थापित करने के लिए जांच जारी है।

इस ऑपरेशन के बारे में जानकारी देते हुए कमिश्नर ऑफ पुलिस (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि विशेष और विश्वसनीय गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए, पुलिस टीमों ने एक सुनियोजित ऑपरेशन चलाया जिसमें आरोपी रेशम सिंह उर्फ घुल्ला को दो 9 एमएम ग्लॉक पिस्तौलों समेत गिरफ्तार किया गया। इसके बाद उसके द्वारा बताए गए स्थान से तीन और पिस्तौल बरामद किए गए।

सीपी ने बताया कि आगे पूछताछ के दौरान, गिरफ्तार मुलजिम रेशम उर्फ घुल्ला ने अपने साथी सुमित उर्फ सचिन के बारे में जानकारी दी, जिसे कार्रवाई के दौरान दो पिस्तौलों समेत गिरफ्तार किया गया। उन्होंने आगे बताया कि जांच के दौरान मुलजिम विशाल कुमार को भी देर शाम गिरफ्तार कर लिया गया।

उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए मुलजिम एक ही हैंडलर के निर्देशों पर काम करते थे और मुलजिम रेशम हैंडलर के इशारे पर सरहद के नजदीक से खेपें प्राप्त करता था, जबकि सुमित उर्फ सचिन अपने कार बेचने/खरीदने के कारोबार की आड़ में इन खेपों को आगे डिलीवर करता था।

इस संबंध में, एफआईआर नंबर 18 दिनांक 01-02-2026 को अमृतसर के थाना छावनी में आर्म्स एक्ट की धारा 25(1-ए), 6, 7 और 8 के तहत दर्ज की गई है।

नकली स्वास्थ्य मंत्री बनकर ठगी करने वाला आरोपी कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर द्वारा गिरफ्तार

साहिल बेरी

अमृतसर 3 फरवरी। कमिश्नरेट पुलिस अमृतसर ने स्वयं को कैबिनेट मंत्री एवं उनके कार्यालय के अधिकारियों के रूप में झूठा प्रस्तुत कर सरकारी अधिकारियों पर अनावश्यक दबाव बनाने और गैर-कानूनी निर्देश जारी करने के एक गंभीर मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया है।

इस संबंध में एफआईआर नंबर 16 दिनांक 03-02-2026, धारा 204, 217, 221, 351(2) बीएनएस, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर में दर्ज की गई है।

यह मामला सिविल अस्पताल अमृतसर में तैनात एक वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी (एसएमओ) द्वारा दी गई लिखित शिकायत के आधार पर सामने आया। शिकायतकर्ता के अनुसार, 3 फरवरी को सुबह करीब 10:34 बजे उनके मोबाइल फोन पर एक कॉल आई। फोन करने वाले व्यक्ति ने शुरुआत में स्वयं को डॉ. बलबीर सिंह, कैबिनेट मंत्री बताकर सिविल अस्पताल अमृतसर में कथित कुप्रबंधन के आरोप लगाए और डराने-धमकाने वाले बयान दिए।

आरोपी ने सरकारी कामकाज में हस्तक्षेप करने के इरादे से कई गैर-कानूनी निर्देश जारी करने की कोशिश की, जिनमें शामिल हैं—

कुछ स्टाफ सदस्यों को सेवा से हटाने की मांग, विशेष पदों पर कुछ व्यक्तियों को बनाए रखने का दबाव, अस्पताल स्टाफ के खिलाफ अपमानजनक व आपत्तिजनक टिप्पणियां, सरकारी मशीनरी और मंत्री वाहनों से झूठे संबंध होने का दावा।

जब शिकायतकर्ता ने कॉल करने वाले की पहचान को लेकर दोबारा सवाल किए, तो उसने अपना बयान बदलते हुए स्वयं को स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह के कार्यालय से गुरजीत सिंह बताया। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया कि आरोपी ने बार-बार झूठे अधिकार का दावा कर मानसिक रूप से परेशान किया और दबाव बनाया।

इसके बाद एसएमओ ने यह मामला सिविल सर्जन, अमृतसर के संज्ञान में लाया। सिविल सर्जन ने स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह से संपर्क किया, जिन्होंने स्पष्ट रूप से ऐसी किसी भी कॉल या निर्देश से इनकार किया और मामले में कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए।

शिकायत की जांच से यह स्पष्ट हुआ कि आरोपी द्वारा सरकारी कर्मचारियों को प्रभावित करने के उद्देश्य से नकली पहचान, आपराधिक धमकी और पद के दुरुपयोग का प्रयास किया गया। इसके आधार पर विधिक कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

गिरफ्तार आरोपी हरजीत सिंह, निवासी गुरबख्श नगर, अमृतसर उम्रः 57 वर्ष शिक्षाः पांचवीं कक्षा पेशाः निजी गोताखोर गिरफ्तारी की तिथि व स्थान

03-02-2026, थाना गेट हकीमा क्षेत्र, अमृतसर

आरोपी के खिलाफ पूर्व मामले (कुल 06)

एफआईआर नंबर 263 दिनांक 04.10.2022, धारा 420, 120(बी) आईपीसी, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर

एफआईआर नंबर 256 दिनांक 26.09.2022, धारा 420, 34 आईपीसी, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर

एफआईआर नंबर 175 दिनांक 30.10.2024, धारा 420 आईपीसी, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर

एफआईआर नंबर 10 दिनांक 19.01.2025, धारा 420 आईपीसी, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर

एफआईआर नंबर 11 दिनांक 19.01.2025, धारा 420 आईपीसी, थाना ए-डिवीजन, अमृतसर

एफआईआर नंबर 06 दिनांक 10.01.2025, धारा 420 आईपीसी, थाना गेट हकीमा, अमृतसरसीपी ने बताया कि आगे पूछताछ के दौरान, गिरफ्तार मुलजिम रेशम उर्फ घुल्ला ने अपने साथी सुमित उर्फ सचिन के बारे में जानकारी दी, जिसे कार्रवाई के दौरान दो पिस्तौलों समेत गिरफ्तार किया गया। उन्होंने आगे बताया कि जांच के दौरान मुलजिम विशाल कुमार को भी देर शाम गिरफ्तार कर लिया गया।

उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए मुलजिम एक ही हैंडलर के निर्देशों पर काम करते थे और मुलजिम रेशम हैंडलर के इशारे पर सरहद के नजदीक से खेपें प्राप्त करता था, जबकि सुमित उर्फ सचिन अपने कार बेचने/खरीदने के कारोबार की आड़ में इन खेपों को आगे डिलीवर करता था।

इस संबंध में, एफआईआर नंबर 18 दिनांक 01-02-2026 को अमृतसर के थाना छावनी में आर्म्स एक्ट की धारा 25(1-ए), 6, 7 और 8 के तहत दर्ज की गई है।

सिंहभूम पहुंचकर सेरेंगसिया शहिदों को मुख्यमंत्री हेमंत ने दी श्रद्धांजलि

398 करोड़ रुपए के योजनाओं का किया शिलान्यास, बांटें 637 करोड़ रूपए की परिसंपत्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, आज का दिन हम सभी के लिए काफी महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक है। हर वर्ष की भांति इस बार भी शूरवीरों की धरती - सेरेंगसिया में अपने अमर वीर शहीदों को नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए हैं। यह दिन हमें अपने वीरों के बलिदान की गाथा को याद दिलाता है । इस अवसर पर हम सभी अपने अमर वीर शहीदों के आदर्श और सपनों को पूरा करने का संकल्प लें। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन आज पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत टोटो प्रखंड में सेरेंगसिया के शहीदों को नमन- सह - परियोजनाओं के शिलान्यास-उद्घाटन एवं परिसंपत्ति वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सेरेंगसिया शहीद स्मारक पर शीश नवाकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हुए संघर्ष के महानायक पोटो हो समेत तमाम वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड हमेशा से शूरवीरों की धरती रही है। साल का कोई भी ऐसा दिन नहीं होता है, जब हम किसी ना किसी वीर शहीद का शहादत दिवस मनाते हैं। अपने वीर शहीदों का सम्मान हमारी परंपरा में शामिल है। इस परंपरा को हम और मजबूती से आगे बढ़ा रहे हैं ताकि हमारे पूर्वजों में जो शहादत दी थी, उसे आने वाली पीढ़ी को बता सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब देश में आजादी की लड़ाई शुरू भी नहीं हुई थी उस वक्त हमारे पूर्वजों ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। कोल्हान का कोल विद्रोह इतिहास के पन्नों में दर्ज है, क्योंकि हमारे आदिवासी और पूर्वजों ने अपनी पहचान, जल - जंगल- जमीन की रक्षा और अंग्रेजों के अन्याय, शोषण और जुल्म के खिलाफ संघर्ष में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। संघर्षों के महानायक भगवान बिरसा मुंडा, सिदो कान्हु, नीलांबर पीतांबर और पोटो हो जैसे अनेकों वीरों और उनकी शहादत की गवाह यह धरती रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार हेडक्वार्टर से नहीं, गांवों से चल रही है। आज सरकार और उसकी योजनाएं समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही है। लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो रहा है। हमारी सरकार की नीतियों और योजनाओं का सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। आज झारखंड विकास के हर मोर्चे पर तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब तक आप आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और बौद्धिक रूप से मजबूत नहीं होंगे तब तक आगे नहीं बढ़ सकते हैं। यही वजह है कि हमारी सरकार हर किसी को इस दृष्टिकोण से सशक्त बनाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि वे अपने बच्चे- बच्चियों को हर हाल में पढ़ाएं। इसमें सरकार आपको हर स्तर पर सहयोग करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीब और जरूरतमंद बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, इसके लिए कई योजनाएं चल रही है। आज हम बच्चों को निजी विद्यालयों की तर्ज पर उत्कृष्ट शिक्षा दे रहे हैं। उन्हें मेडिकल और इंजीनियरिंग समेत अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए निः शुल्क कोचिंग दी जा रही है। विदेशों में उच्च शिक्षा के लिए शत प्रतिशत स्कॉलरशिप दी जा रही है। हमारी कोशिश यही है यहां के बच्चे भी ऊंचे पदों पर पहुंच सके

मुख्यमंत्री ने कहा कि आधी आबादी को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना हमारा संकल्प है। मुख्यमंत्री मइंया सम्मान योजना इसी कड़ी का एक अहम हिस्सा है। इस योजना के माध्यम से 18 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को हर वर्ष तीस हजार रुपए दे रहे हैं ताकि वे अपने बल पर अपने को खड़ा कर सकें। ऐसी ही कई और योजनाएं हैं, जिनके जरिए हम राज्य वासियों को सहूलियत और सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 398 करोड़ 19 लाख 35 हज़ार 298 रुपए की लागत से 197 विकास योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया. इसमें 224 करोड़ 78 लाख 77 हज़ार 843 रुपए की लागत से 122 योजनाओं का शिलान्यास एवं 173 करोड़ 40 लाख 57 हज़ार 405 रुपए की लागत से 75 महत्वाकांक्षी योजनाओं का उद्घाटन शामिल है। इसके साथ विभिन्न विभागों से संबंधित योजनाओं के 3 लाख 77 हजार 256 लाभार्थियों के बीच 637 करोड़ 43 लाख 13 हज़ार 500 रुपए की परिसंपत्तियां बांटी. इसके अलावा 1479 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किया।

इस अवसर पर मंत्री दीपक बिरुवा, सांसद श्रीमती जोबा मांझी, विधायक निरल पूर्ति, विधायक दशरथ गागरई, विधायक सुखराम उरांव, विधायक सोनाराम सिंकू, विधायक श्रीमती सविता महतो, विधायक समीर मोहंती, विधायक संजीव सरदार, विधायक जगत मांझी, विधायक सोमेश चंद्र सोरेन, जिला परिषद अध्यक्ष सुश्री लक्ष्मी सुरीन, पुलिस उप महानिरीक्षक अनुरंजन किस्पोट्टा तथा जिले के उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक अमित रेणु उपस्थित रहे।

मन को जीत लो, संसार स्वयं जीत में बदल जाएगा

-सुनील कुमार महला

हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में एक अत्यंत गूढ़ और सार्थक पंक्ति कही गई है-'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।' इसका आशय यह है कि जीवन में हार और जीत का वास्तविक निर्धारक बाहरी परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि मन की स्थिति होती है। परिस्थितियाँ तो केवल माध्यम हैं, असली निर्णायक की भूमिका तो मनुष्य मन निभाता है। यदि मन डर, शंका और निराशा से घिरकर पहले ही हार मान ले, तो साधन, संसाधन और अवसर होते हुए भी पराजय निश्चित हो जाती है। इसके विपरीत, यदि मन दृढ़, साहसी, सकारात्मक और विश्वास से भरा हो, तो विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी जीत संभव हो जाती है। वास्तव में, जीवन की हर हार और जीत पहले मन में घटती है, उसके बाद वास्तविक जीवन में दिखाई देती है। जो व्यक्ति मन से हार जाता है, वह कभी जीत नहीं सकता, लेकिन जिसने मन में यह ठान लिया कि वह जीतेगा और हर हाल में जीतेगा, वह अंततः विजयी होता ही है। हमारी पराजय या विजय शारीरिक शक्ति पर नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता पर निर्भर करती है। जब हम मन से यह स्वीकार कर लेते हैं कि हम नहीं जीत सकते, उसी क्षण हमारी आधी शक्ति समाप्त हो जाती है। वहीं अटूट विश्वास हमें कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी रास्ता दिखा देता है। याद रखिए कि भय मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। भय से ही चिंताओं का जन्म होता है और ये चिंताएँ अक्सर अनावश्यक कल्पनाओं से उपजती हैं। जब व्यक्ति उन बातों की कल्पना करने लगता है, जो अभी घटित ही नहीं हुई हैं, तो उसके भीतर भय पैदा होता है। यही भय उसे सकारात्मक सोचने, आगे बढ़ने और पूर्ण रूप से जीने से रोक देता है।मनुष्य विशेष रूप से उन चीज़ों से अधिक डरता है, जिन्हें वह देख नहीं सकता। जो संकट अभी आया ही नहीं है-अर्थात भविष्य की चिंता-वह मन में एक 'भूत' की तरह होता है। उसका कोई निश्चित आकार नहीं होता, इसलिए वह और अधिक डरावना प्रतीत होता है। यह अनदेखा डर व्यक्ति को भीतर ही भीतर भयभीत करता रहता है और अंततः वह बिना लड़े ही हार मान लेता है।इसके विपरीत, जो व्यक्ति इन आशंकाओं से ऊपर उठकर संकल्प करता है, मेहनत करता है और संघर्ष करता है, वह बड़ी से बड़ी कठिनाइयों को भी पार कर लेता है। इतिहास इसके अनेक उदाहरणों से भरा पड़ा है। उदाहरण के तौर पर अरुणिमा सिन्हा ने एक दुर्घटना में अपना पैर खो देने के बावजूद मन से हार नहीं मानी और विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट को फतह किया। अब्राहम लिंकन जीवन में कई चुनाव हारने के बाद भी विचलित नहीं हुए और अंततः अमेरिका के राष्ट्रपति बने। ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि परिस्थितियाँ नहीं, मनुष्य का मन ही उसकी नियति तय करता है। वास्तव में मनुष्य मन जानता है कि संकटों से कैसे निपटना है, लेकिन मन चंचल भी होता है। नकारात्मक ऊर्जा व्यक्ति को जल्दी आकर्षित करती है और वह उन बातों को लेकर चिंतित हो जाता है, जिनका कोई वास्तविक आधार नहीं होता। वह भविष्य की चिंता और अतीत की स्मृतियों में उलझकर अपना वर्तमान खो देता है, जबकि सच्चाई यह है कि मनुष्य के नियंत्रण में केवल वर्तमान ही होता है।यह कहा गया है कि साम्राज्य तलवारों से नहीं, शंकाओं से टूटे हैं। जब मन में शंका प्रवेश कर जाती है, तो सबसे शक्तिशाली व्यक्ति भी कमजोर पड़ जाता है। किसी भी बाहरी युद्ध को जीतने से पहले उसे मन में जीतना आवश्यक होता है। इसलिए मन में संदेह, भय और नकारात्मकता के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।मनुष्य को यह समझना चाहिए कि भविष्य में क्या होगा या क्या नहीं होगा, इसकी चिंता करना व्यर्थ है। हमारे कर्म ही हमें विस्तार देते हैं। जो हमारे हाथ में है, वह वर्तमान है। इसलिए आवश्यक है कि हम भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान में पूरे होश-हवास के साथ अपने कर्म करें। जब हम वर्तमान में ईमानदारी और समर्पण से कार्य करते हैं, तो भविष्य का अंधकार स्वतः छँटने लगता है।सरल शब्दों में कहें तो इंसान वास्तविक समस्याओं से तो समझौता कर लेता है, लेकिन आने वाली संभावित परेशानियों की चिंता उसे भीतर से तोड़ देती है। डर सबसे पहले मन को हराता है और जब मन हार जाता है, तो बाहरी जीत भी असंभव हो जाती है। इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े पतन बाहरी शत्रुओं से नहीं, बल्कि अंदर के भय से हुए हैं। महान वही होता है, जो डर के बावजूद आगे बढ़े। जो व्यक्ति केवल सामने की वास्तविकता पर ध्यान देता है और अपने कर्म करता है, वही अपने भविष्य को सही दिशा दे पाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम अनदेखी आशंकाओं से डरने के बजाय उन्हें समझें और विवेक से उनका सामना करें।जब इंसान अपने मन के भय से मुक्त हो जाता है, तभी वह वास्तव में स्वतंत्र होता है और यही सच्ची जीत है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

पाक और चीन की यारी...!

अब तो सुकून पा रहें होंगे पाक के हुक्मरान,
कहीं तो ऊंचा हो रहा हैं उनके देश का नाम।
पाँच सालों से गधों की संख्या बढ़ती जा रही,
भले महंगाई डायन अवाम का खून चूस रहीं।

पाक में इस समय 60 लाख से ज्यादा गधे हैं,
इस बढ़ोत्री से तो भई चीन के मज़े ही मज़े हैं।
इस्लामाबाद और बीज़गि की ज़बरदस्त यारी,
गधों की सप्लाई से 'डॉलर' कमाने की तैयारी।

चीन में गधों की डिमांड में वृद्धि आया मौका,
शहबाज ने बिना बॉल के लगा दिया है चौका।
चीनी खरीदारों ने अपनी नजरें खूब हैं जमाई,
अभी यहाँ कंगाली में दिख रहीं सिर्फ कमाई।
(संदर्भ-पाकिस्तान में गधों की आबादी पहुंची 60 लाख पार)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

135 वर्ष पूर्व जिस राज परिवार ने लोकल सेल्फ गवर्मेंट स्थापित की

जनता ने उतारा उनके उत्तराधिकारी को मैदान मे

* आज राजा सरायकेला पारंपारिक राज विजय धुन के साथ निकलेंगे नगर अध्यक्ष का पर्चा भरने*

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेलाः भारतीय देशी रियासतों के एक राजा ने करीब 135 वर्ष पूर्व लोकल सेल्फ गवर्मेंट Serailkella Municipality जनहित मे बनाया,तब जब प्रजा के जीवन स्तर पर काम करना कम ही राजाओं को मालुम था । इसके

जनक अंग्रेजी हुकूमत के लार्ड रिपन रहे । रिपन को भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक कहा जाता है, जिन्होंने 1882 में प्रस्ताव रखा था और उधर सरायकेला स्टेट ने 1889 मे इसे धरातल पर उतार कर रख दी ।जिसे इंग्लैंड मे बैठी उस चर्चित गोरी मेम की शासन चलाने वाली सरकार भी तब भली भांति इसे जानती थी । जिस राजा ने अपनी विरासत में उसके निवासी लोगों, उनकी भाषा , कला ,संस्कृति की अमूल्य धरोहरों को संजोकर रखा आज उसकी उजाड़ पर लोगों का नाराज होना स्वाभाविक है ।उनके मौजूदा पीढ़ी के राजा को अतीत की दुहाई देकर लोग उन्हें चुनावी मैदान मे उतरने हेतु विवश कर दिया है इस ऐतिहासिक शहर सरायकेला मे ।ऐसे मे मौजूदा राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव नगर पंचायत के पिता के कुर्सी पर विराजमान होने मे संभवतः कोई ताकत उन्हें रोक नहीं सकता। अब ऐसा प्रतित होने चला है । मंगलवार को आप अपनी पारंपरिक राजकीय सामरिक धुन राज विजय के साथ अपने महल से निकलेंगें ।जो धुन मां दुर्गा महिशासुर मर्दनी उनकी पर्याय मां सरायकेला में पाउडी तथा उनके आयुधों से विजय प्राप्ति को स्थानीय परिवेश में समर्पित माना जाता है ।

मौजूदा राजा साहब प्रताप आदित्य सिंहदेव आज नगर पंचायत अध्यक्ष पद के लिए नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इस संबंध में राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव व रानी साहिबा अरुणिमा सिंहदेव ने सोमवार को पैलेस में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जन संदेश भी अपने नगर को दिया है ।

उन्होंने बताया कि वे नगरवासियों के आग्रह पर ही अध्यक्ष का चुनाव लड़ने का मन बनाया है और मंगलवार को दोपहर 1 बजे निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। उन्होंने कहा वे किसी राजनीतिक दल के प्रत्याशी नही है बल्कि पूरे नगरवासियों का प्रत्याशी है और नगर के जनता का निस्वार्थ भाव से सेवा करना उनका प्राथमिकता है ।

उन्होंने कहा हमारे पूर्वज उदित नारायण सिंहदेव द्वारा वर्ष 1889 में नगर पंचायत की स्थापना की थी और पूरा राज्य तब से अब तक विशेषकर नगर उनका परिवार जैसा था है। पूरे नगर का इस पैलेस के साथ एक आत्मीय संबंध है। । रानी अरुणिमा सिंहदेव का नगर अध्यक्ष कार्यकाल के दौरान की गई कार्यों की जानकारी देते हुए राजा ने कहा हर क्षेत्र में नगर वासियों के लिए बेहतर कार्य किया गया । अब हर गरीब का पक्का घर व नगर में उच्च स्तरीय सभी जन सुविधाओ का बहाल करना हमारी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा सर्वविदित तथ्य है कि कुछ पारिवारिक कारणों से पिछले कुछ दिनों से नगरवासियों से कटे हुए थे लेकिन पिछले छह माह से अब लगातार नगरवासियों के साथ है और हमेशा रहेंगे। कांग्रेस द्वारा राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव को समर्थन दिए जाने की बात पर उन्होंने कहा यह उनका अपना निर्णय है ।मौके पर रानी अरुणिमा सिंहदेव समेत अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे ।

वैसे 1620ई मे स्थापित सरायकेला राज्य का एक बड़ा वैभवशाली इतिहास रहा है । भले ही कतिपय कारण वश इसे अक्षुण बनाये रखने मे सरकारें एवं टूटपूंजिए नेता हमेशा विपरित चाल चलते रहे हैं ।तरह तरह हथकंडे अपना कर लोगों को गुमराह करते रहे है । जिनके कारण सरायकेला जनमानस की

भाषा, संस्कृति ,शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय आदि प्रभावित हुई है । जो सरायकेला जनमानस के लिए अपूरणीय क्षति है ।जिसका एक मात्र रोक सरायकेला राजमहल का इतिहास को महत्व देना है । अन्य जो सत्ता सुख भोगते हुए लोगों को गुमराह करते रहे हैं यह सर्व विदित है, जग जाहिर है । सरायकेला की जन जीवन उत्थान हेतु राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव का होना केवल आवश्यक नहीं पर जरूरी भी यह ।

ओडिशा की राजनीति में BJD सबसे नीची पार्टी है: बिरंची नारायण त्रिपाठी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वरः 2024 के आम चुनावों में ओडिशा की जनता द्वारा बीजू जनता दल को नकारे जाने के बाद, पार्टी के नेता मानसिक अवसाद की स्थिति में हैं। इस संबंध में, उन्हें पता नहीं है कि वे क्या बोल रहे हैं। BJD ओडिशा की राजनीति में सबसे नीची पार्टी बनने जा रही है, यह उनके विभिन्न भाषणों में देखा जा सकता है, ऐसा आज राज्य कार्यालय में राज्य महासचिव बिरंची नारायण त्रिपाठी ने कहा।

श्री त्रिपाठी ने कहा कि चुनावों के लंबे समय बाद, BJD ने अब EVM और 17C फॉर्म का मुद्दा उठाया है। जब से देश में EVM लागू हुई है, BJD ने 5 में से 4 चुनावों में जीत हासिल की है। जब वे जीत रहे थे, तब उन्होंने EVM पर सवाल नहीं उठाया, लेकिन अब हारने के बाद, वे इसे गलती बताकर झूठ क्यों बोल रहे हैं? BJD इसका जवाब देगी। चुनावों के दौरान, जो बूथों में एजेंट होते हैं, वे बूथ में पीठासीन अधिकारी से 17 फॉर्म लाते हैं। पिछले आम चुनावों में करीब 37,800 बूथ थे। उस समय इन बूथों पर BJD के 37,800 एजेंट होने थे। और अगर लोकसभा और विधानसभा को मिला दें तो अलग-अलग बूथों पर करीब 75,000 एजेंट होने थे। लेकिन किसी भी बूथ पर किसी एजेंट ने यह सवाल नहीं उठाया कि 17 फॉर्म क्यों नहीं मिले। चुनाव के इतने दिन बाद और हार के बाद ओडिशा की जनता तय करेगी कि अब यह सवाल उठाना कितना सही है। अगर उनके पास सबूत हैं तो वे भारत के संवैधानिक सिस्टम के हिसाब से इस मामले को हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट ले जा सकते हैं। लेकिन BJD ऐसा नहीं कर रही है और मीडिया में घटिया बयान दे रही है। सुप्रीम कोर्ट पहले ही कह चुका है कि उसे EVM से छेड़छाड़ का कोई सबूत नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि EVM से छेड़छाड़ भी नहीं की जा सकती। अगर BJD के पास यह साबित करने के लिए सबूत हैं कि सुप्रीम कोर्ट गलत है, तो डेमोक्रेसी की रक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट को सबूत देना ज़रूरी है। BJD ने फिर आरोप लगाया है कि BJP ने सरकारी कर्मचारियों का इस्तेमाल करके चुनाव जीता। 2024 से पहले ओडिशा में BJD की सरकार थी। उस समय ओडिशा सरकार के कर्मचारी चुनाव मैनेज करते थे। फिर BJD चुनाव कैसे जीत गई? चुनाव मैनेज करने वाले कर्मचारी पार्टी के तौर पर काम नहीं करते। क्योंकि राजनीतिक पार्टियों की सरकारें आती-जाती रहती हैं, लेकिन कर्मचारी बने रहते हैं। ऐसे कर्मचारियों को अपनी हार का दोष देना बहुत निंदनीय है। ओडिशा की जनता ऐसे कमेंट्स को माफ नहीं करेगी और सरकारी कर्मचारी इन्हें कभी स्वीकार नहीं करेंगे। अगर BJD के पास किसी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ सबूत हैं, तो उन्हें सार्वजनिक करना चाहिए। भारत के संविधान में भी संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने का प्रावधान है। लेकिन BJD बिना कोई जानकारी दिए लगातार मीडिया के सामने बकवास कर रही है। सभ्य समाज में यह स्वीकार्य नहीं है। चुनाव के बाद के समय में जब BJD में सिविल वॉर चल रहा है, पार्टी के कार्यकर्ता हर दिन पार्टी छोड़कर BJP में शामिल हो रहे हैं। BJD इस मुद्दे से ध्यान हटाने के लिए मीडिया के जरिए यह ड्रामा कर रही है। इसी तरह, SIR पर BJD के उठाए गए सवाल से पहले यह जान लेना चाहिए कि आज़ादी के बाद से देश में 9 बार SIR हो चुका है। वोटर लिस्ट की समीक्षा और उसमें बदलाव की ज़िम्मेदारी इलेक्शन कमीशन की है। जब से BJD इसका विरोध कर रही है, ऐसा लगता है कि अब उसे डेमोक्रेसी पर भरोसा नहीं रहा। क्या BJD नहीं चाहती कि देश और राज्य डेमोक्रेसी से चले? BJD ने एक और मुद्दा उठाया है कि देश के नागरिकों की जानकारी भारत सरकार के पास रखी जा रही है। देश के वोटर कौन हैं, क्या यह जानकारी भारत सरकार के बजाय विदेशियों के पास होगी? यह देश कोई धर्मशाला नहीं है जहाँ कोई हिसाब-किताब न हो कि कौन आता है या रहता है। BJD की ऐसी घटिया सोच की वजह से ही आज ओडिशा की जनता ने उसे नकार दिया है। बीजू जनता दल इसके बिना सत्ता में नहीं रह सकता, यह इसका एक शानदार उदाहरण है, श्री त्रिपाठी ने कहा।

राष्ट्रपति जाजपुर में विरजा मा को दर्शन और नाभिगया मे पिंडदान किया

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जाजपुर में एक प्रोग्राम में शामिल होने के बाद बालासोर पहुंच गई हैं। फकीरमोहन यूनिवर्सिटी के कॉन्वोकेशन सेरेमनी में शामिल हुई हैं। राष्ट्रपति के दौरे के लिए बालासोर शहर में भारी पुलिस तैनात की गई है। इससे पहले, राष्ट्रपति जाजपुर गए और मां वीरजा के दर्शन किए।नवगया में दर्शन के साथ माता का पिंडदान किया गया।

नाभिगया में पितरों को पिंडदान करने के लिए मंदिर में 16 ब्राह्मणों समेत 32 लोग मौजूद थे। राष्ट्रपति के कार्यक्रम के लिए मां बिरजा का खास पहनावा और शिष्टाचार किया गया है। बालासोर कार्यक्रम के बाद राष्ट्रपति दोपहर करीब 3:50 बजे पुरी के लिए रवाना होंगे। वे आज रात पुरी लोक भवन में रुकेंगे। कल सुबह वे भगवान जगन्नाथ के दर्शन करेंगे। वे सुबह करीब 7:40 बजे श्वेतगंगा में पिंडदान करेंगे। सुबह 9:50 बजे महामाह बिरजा मंदिर पहुंचने के बाद सबसे पहले पिंडदान का काम शुरू हुआ। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के कार्यक्रम में राज्यपाल डॉ. हरिबाबू कंभमपति, पंचायती राज मंत्री रवि नारायण नायक, RDC, एडिशनल DG, सेंट्रल DIAG, जाजपुर के जिला मजिस्ट्रेट और SP प्रमुख रूप से मौजूद हैं।

जानकारी के अनुसार, मां का दर्शन, पूजन और परिक्रमा की गई। पिंडदान समारोह के लिए सरोज कुमार पति, अविनाश पानी,

सत्य रंजन पानी और कल्याण पानी पूजा करने वाले थे। हिरमाशु शेखर पतिमिश लीडर के तौर पर मौजूद थे, जबकि डॉ. ज्ञान रंजन पति के साथ दुर्गा माधव पानी, विजय कुमार पानी और सत्य रंजन पानी मां की पूजा करने वाले थे।

सिंहभूम पहुंचकर सेरेंगसिया शहिदों को मुख्यमंत्री हेमंत ने दी श्रद्धांजलि

398 करोड़ रुपए के योजनाओं का किया शिलान्यास, बांटें 637 करोड़ रुपए की परिसंपत्ति

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, आज का दिन हम सभी के लिए काफी महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक है। हर वर्ष की भांति इस बार भी शूरवीरों की धरती - सेरेंगसिया में अपने अमर वीर शहीदों को नमन और श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एकत्रित हुए हैं। यह दिन हमें अपने वीरों के बलिदान की गाथा को याद दिलाता है । इस अवसर पर हम सभी अपने अमर वीर शहीदों के आदर्श और सपनों को पूरा करने का संकल्प लें। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन आज पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत टोटो प्रखंड में सेरेंगसिया के शहीदों को नमन- सह - परियोजनाओं के शिलान्यास- उद्घाटन एवं परिसंपत्ति वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने सेरेंगसिया शहीद स्मारक पर शीश नवाकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ हुए संघर्ष के महानायक पोटो हो समेत तमाम वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड हमेशा से शूरवीरों की धरती रही है। साल का कोई भी ऐसा दिन नहीं होता है, जब हम किसी ना किसी वीर शहीद का शहादत दिवस मनाते हैं। अपने वीर शहीदों का सम्मान हमारी परंपरा में शामिल है। इस परंपरा को हम और मजबूती से आगे बढ़ा रहे हैं ताकि हमारे पूर्वजों में जो शहादत दी थी, उसे आने वाली पीढ़ी को बता सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब देश में आजादी की लड़ाई शुरू भी नहीं हुई थी उस वक्त हमारे पूर्वजों ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। कोल्हान का कोल विद्रोह इतिहास के पन्नों में दर्ज है, क्योंकि हमारे आदिवासी और पूर्वजों ने अपनी पहचान, जल - जंगल- जमीन की रक्षा और अंग्रेजों के अन्याय, शोषण और जुल्म के खिलाफ संघर्ष में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। संघर्षों के महानायक भगवान बिरसा मुंडा, सिदो कान्हु, नीलांबर पीतांबर और पोटो हो जैसे अनेकों वीरों और उनकी शहादत की गवाह यह धरती रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार हेडक्वार्टर से नहीं, गांवों से चल रही है। आज सरकार और उसकी योजनाएं समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रही है। लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान हो रहा है। हमारी सरकार की नीतियों और योजनाओं का सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। आज झारखंड विकास के हर मोर्चे पर तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब तक आप आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और बौद्धिक रूप से मजबूत नहीं होंगे तब तक आगे नहीं बढ़ सकते हैं। यही वजह है कि हमारी सरकार हर किसी को इस दृष्टिकोण से सशक्त बनाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि वे अपने बच्चे- बच्चियों को हर हाल में पढ़ाएं। इसमें सरकार आपको हर स्तर पर सहयोग करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीब और जरूरतमंद बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, इसके लिए कई योजनाएं चल रही है। आज हम बच्चों को निजी विद्यालयों की तर्ज पर उत्कृष्ट शिक्षा दे रहे हैं। उन्हें मेडिकल और इंजीनियरिंग समेत अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए निः शुल्क कोचिंग दी जा रही है। विदेशों में उच्च शिक्षा के लिए शत प्रतिशत स्कॉलरशिप दी जा रही है। हमारी कोशिश यही है यहां के बच्चे भी ऊंचे पदों पर पहुंच सके

मुख्यमंत्री ने कहा कि आधी आबादी को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना हमारा संकल्प है। मुख्यमंत्री मइंया सम्मान योजना इसी कड़ी का एक अहम हिस्सा है। इस योजना के माध्यम से 18 से 50 वर्ष तक की महिलाओं को हर वर्ष तीस हजार रुपए दे रहे हैं ताकि वे अपने बल पर अपने को खड़ा कर सकें। ऐसी ही कई और योजनाएं हैं, जिनके जरिए हम राज्य वासियों को सहूलियत और सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 398 करोड़ 19 लाख 35 हज़ार 298 रुपए की लागत से 197 विकास योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया. इसमें 224 करोड़ 78 लाख 77 हज़ार 843 रुपए की लागत से 122 योजनाओं का शिलान्यास एवं 173 करोड़ 40 लाख 57 हज़ार 405 रुपए की लागत से 75 महत्वाकांक्षी योजनाओं का उद्घाटन शामिल है। इसके साथ विभिन्न विभागों से संबंधित योजनाओं के 3 लाख 77 हजार 256 लाभार्थियों के बीच 637 करोड़ 43 लाख 13 हज़ार 500 रुपए की परिसंपत्तियां बांटी. इसके अलावा 1479 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किया। इस अवसर पर मंत्री दीपक बिरुवा, सांसद श्रीमती जोबा मांझी, विधायक निरल पूर्ति, विधायक दशरथ गागरई, विधायक सुखराम उरांव, विधायक सोनाराम सिंकू, विधायक श्रीमती सविता महतो, विधायक समीर मोहंती, विधायक संजीव सरदार, विधायक जगत मांझी, विधायक सोमेश चंद्र सोरेन, जिला परिषद अध्यक्ष सुश्री लक्ष्मी सुरीन, पुलिस उप महानिरीक्षक अनुरंजन किस्पोट्टा तथा जिले के उपायुक्त चंदन कुमार, पुलिस अधीक्षक अमित रेणु उपस्थित रहे।

सरायकेला के राजा प्रताप आदित्य ने राज विजय धुन के साथ महल से निकल कर पर्चे भरे

लोगों ने माना शिक्षित राजा का अध्यक्ष बनना समय की वास्तविक पुकार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची , सरायकेला राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव ने नगर पंचायत के अध्यक्ष पद हेतु आज अपना चुनावी पर्चा उपायुक्त कार्यालय में चुनाव अधिकारी के कार्यालय में दाखिल की ।उनके साथ बड़ी तादाद में उन्हें चाहने वाली जनता साथ खड़ी रही । सर्वप्रथम पैलेस में पर्चे हेतु आवश्यक कागजात भरे गये । जिसमें स्थानीय लोगों की काफिला उनके पास खड़ी थी । इसके साथ सरायकेला छऊ के वाद्य के मुर्धन्द कलाकारों ने राज विजय धुन ,शंख ध्वनि बजाकर उन्हें गन्तव्य की दिशा में आगे किया । वे पंडित गोपबंधु दास के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण की ।

सोलह कला तत्संबंधित वाद्यों की नगरी सरायकेला में राज विजय धुन तब बजता था जब राजा कभी युद्ध भूमि मैं सैनिकों को भेजते थे अथवा किसी अच्छे काम में निकलते थे । यह धुन सरायकेला छऊ नृत्य के दुर्गा ताल के नाचपाली में भी बजता है । वास्तव में यह विजय का धुन है शास्त्रीयता के आधार पर है 16 कली युक्त है ।इसकी संपूर्ण कॉपीराइट इस ओडिया कला को जाता है जिसका निर्माण युद्ध के अखाड़ों एवं युद्ध कौशल से होकर आया हुआ है। और यह सरायकेला के मूल लोगों की पैतृक परिसंपत्ति रही है।

राजा सरायकेला के साथ रानी अरूणिमा सिंहदेव भी उपायुक्त कार्यालय में डटी रही । जहां करीब 1 घंटे के बाद पर्चा दाखिल होने के साथ राजा सरायकेला बाहर निकले । उन्होंने मीडिया में भी अपनी प्रतिक्रिया दी । वैसे 1620 मे स्थापित सरायकेला राज्य का एक बड़ा वैभवशाली इतिहास रहा है । आज रायपुर के राजकुमार कालेज में पढ़ें राजा प्रताप आदित्य इसके अध्यक्ष पद हेतु नामांकन किये है ।

भले ही कतिपय कारण वश सरायकेला के विकास को अक्षुण बनाये रखने मे सरकारें एवं टूटपूजिए नेता हमेशा विपरित चाल चलते रहे ।तरह तरह हथकंडे अपना कर लोगों को गुमराह करते रहे है पर बुद्धिजीवी लोग इसे खूब समझते है। आज सरायकेला जनमानस की

भाषा, संस्कृति ,शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय आदि प्रभावित हुई है । जो सरायकेला जनमानस के लिए अपूरणीय क्षति है । जिसका एक मात्र रोक सरायकेला राजमहल का इतिहास रहा है । अन्य जो सत्ता सुख भोगते हुए लोगों को गुमराह करते रहे हैं यह भी किस से नहीं छुपा है । सरायकेला की जन जीवन उत्थान हेतु राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव का होना केवल आवश्यक ही नहीं पर जरूरी भी है।

135 वर्ष पूर्व जिस राज परिवार ने लोकल सेल्फ गवर्मेंट स्थापित की , जनता ने उतारा उनके उत्तराधिकारी को मैदान मे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

आज राजा सरायकेला पारंपारिक राज विजय धुन के साथ निकलेंगे नगर अध्यक्ष का पर्चा भरने

सरायकेलाः भारतीय देशी रियासतों के एक राजा ने करीब 135 वर्ष पूर्व लोकल सेल्फ गवर्मेंट Serailkella Municipality जनहित मे बनाया,तब जब प्रजा के जीवन स्तर पर काम करना कम ही राजाओं को मालुम था । इसके

जनक अंग्रेजी हुकूमत के लार्ड रिपन रहे । रिपन को भारत में स्थानीय स्वशासन का जनक कहा जाता है, जिन्होंने 1882 में प्रस्ताव रखा था और उधर सरायकेला स्टेट ने 1889 मे इसे धरातल पर उतार कर रख दी ।जिसे इंग्लैंड मे बैठी उस चर्चित गोरी मेम की शासन चलाने वाली सरकार भी तब भली भांति इसे जानती थी । जिस राजा ने अपनी विरासत में उसके निवासी लोगों, उनकी भाषा , कला ,संस्कृति की अमूल्य धरोहरों को संजोकर रखा आज उसकी उजाड़ पर लोगों का नाराज होना स्वाभाविक है ।उनके मौजूदा पीढ़ी के राजा को अतीत की दुहाई देकर लोग उन्हें चुनावी मैदान मे उतरने हेतु विवश कर दिया है इस ऐतिहासिक शहर सरायकेला मे ।ऐसे मे मौजूदा राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव नगर पंचायत के पिता के कुर्सी पर विराजमान होने मे संभवतः कोई ताकत उन्हें रोक नहीं सकता। अब ऐसा प्रतित होने चला है । मंगलवार को आप अपनी पारंपरिक राजकीय सामरिक धुन राज विजय के साथ अपने महल से निकलेंगें । जो धुन मां दुर्गा महिशासुर मर्दनी उनकी पर्याय मां सरायकेला में पाउडी तथा उनके आयुधों से विजय प्राप्ति को स्थानीय परिवेश में समर्पित माना जाता है ।

मौजूदा राजा साहब प्रताप आदित्य सिंहदेव आज नगर पंचायत अध्यक्ष पद के लिए नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। इस संबंध में राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव व रानी साहिबा अरुणिमा सिंहदेव ने सोमवार को पैलेस में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर जन संदेश भी अपने नगर को दिया है ।

उन्होंने बताया कि वे नगरवासियों के आग्रह पर ही अध्यक्ष का चुनाव लड़ने का मन बनाया है और मंगलवार को दोपहर 1 बजे निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन पत्र दाखिल करेंगे। उन्होंने कहा वे किसी राजनीतिक दल के प्रत्याशी नही है बल्कि पूरे नगरवासियों का प्रत्याशी है और नगर के जनता का निस्वार्थ भाव से सेवा करना उनका प्राथमिकता है ।

उन्होंने कहा हमारे पूर्वज उदित नारायण सिंहदेव द्वारा वर्ष 1889 में नगर पंचायत की स्थापना की थी और पूरा राज्य तब से अब तक विशेषकर नगर उनका परिवार जैसा था है। पूरे नगर का इस पैलेस के साथ एक आत्मीय संबंध है। । रानी अरुणिमा सिंहदेव का नगर अध्यक्ष कार्यकाल के दौरान की गई कार्यों की जानकारी देते हुए राजा ने कहा हर क्षेत्र में नगर वासियों के लिए बेहतर कार्य किया गया । अब हर गरीब का पक्का घर व नगर में उच्च स्तरीय सभी जन सुविधाओ का बहाल करना हमारी प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा सर्वविदित तथ्य है कि कुछ पारिवारिक कारणों से पिछले कुछ दिनों से नगरवासियों से कटे हुए थे लेकिन पिछले छह माह से अब लगातार नगरवासियों के साथ है और हमेशा रहेंगे। कांग्रेस द्वारा राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव को समर्थन दिए जाने की बात पर उन्होंने कहा यह उनका अपना निर्णय है ।मौके पर रानी अरुणिमा सिंहदेव समेत अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे । वैसे 1620ईं मे स्थापित सरायकेला राज्य का एक बड़ा वैभवशाली इतिहास रहा है । भले ही कतिपय कारण वश इसे अक्षुण बनाये रखने मे सरकारें एवं टूटपूजिए नेता हमेशा विपरित चाल चलते रहे हैं ।तरह तरह हथकंडे अपना कर लोगों को गुमराह करते रहे है । जिनके कारण सरायकेला जनमानस की

भाषा, संस्कृति ,शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय आदि प्रभावित हुई है । जो सरायकेला जनमानस के लिए अपूरणीय क्षति है । जिसका एक मात्र रोक सरायकेला राजमहल का इतिहास को महत्व देना है । अन्य जो सत्ता सुख भोगते हुए लोगों को गुमराह करते रहे हैं यह सर्व विदित है, जग जाहिर है । सरायकेला की जन जीवन उत्थान हेतु राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव का होना केवल आवश्यक नहीं पर जरूरी भी यह।

शहरवासियों की सुरक्षा के लिए नगर निगम ने फायर ब्रिगेड के बेड़े में किया बड़ा इजाफा

साहिल बेरी

अमृतसर, 03 फरवरी। शहर में आग लगने की घटनाओं पर तेजी से काबू पाने और जन-धन की सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आज नगर निगम अमृतसर द्वारा फायर ब्रिगेड विभाग के बेड़े में 4 नई अत्याधुनिक फायर टेंडर गाड़ियों को शामिल किया गया। माननीय मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने इन नई गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर मेयर श्री जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि अमृतसर शहर की तंग गलियों और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में आग बुझाने एवं रेस्क्यू कार्यों को अधिक प्रभावी और सुचारू बनाने में ये नई फायर गाड़ियाँ बेहद सहायक सिद्ध होंगी। इन वाहनों के जुड़ने से आपातकालीन परिस्थितियों में फायर ब्रिगेड की प्रतिक्रिया क्षमता में उल्लेखनीय सुधार होगा।

फायर ब्रिगेड के बेड़े में शामिल किए गए नए वाहन इस प्रकार हैं:

वाटर बाउज़र – 1

मिनी फायर टेंडर – 1

मिनी फायर टेंडर कम रेस्क्यू टेंडर – 2

फायर ब्रिगेड विभाग की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए मेयर साहिब ने बताया कि नगर निगम द्वारा पिछले कुछ समय से विभाग को निरंतर सशक्त किया जा रहा है। वर्ष 2025 में स्थानीय सरकार विभाग की ओर से पहले ही 6 नए फायर टेंडर उपलब्ध करवाए गए थे। इसके अतिरिक्त, पुराने 20 फायर टेंडरों और अब शामिल की गई 4 नई गाड़ियों को मिलाकर अमृतसर शहर के पास अब कुल 30 फायर टेंडरों का मजबूत बेड़ा उपलब्ध है।

उन्होंने यह भी जानकारी दी कि तंग गलियों और संकरी सड़कों में त्वरित राहत पहुंचाने के लिए 5 फायर मोटरसाइकिलें भी लगातार सेवाएं दे रही हैं।

पांच फायर स्टेशनों से 24 घंटे सेवाएं उपलब्ध

शहर के विभिन्न हिस्सों में स्थापित 5 फायर स्टेशनों के माध्यम से फायर ब्रिगेड की सेवाएं 24 घंटे उपलब्ध करवाई जा रही हैं। मेयर साहिब ने कहा कि नगर निगम का मुख्य उद्देश्य किसी भी आपात स्थिति में 'रिस्पॉन्स टाइम' को न्यूनतम करना है, ताकि समय रहते घटनास्थल पर पहुंचकर कीमती जान-माल की रक्षा की जा सके।

इस मौके पर नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारी एवं फायर ब्रिगेड विभाग का समस्त स्टाफ विशेष रूप से उपस्थित रहा।

4 नई अत्याधुनिक फायर टेंडर गाड़ियों को दिखाई गई हरी झंडी :– मेयर जतिंदर सिंह भाटिया

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023